Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष-39 अंक-18
कल्पादि सम्वत् 1972949115

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 22 जुलाई से 28 जुलाई 2015 तक
द्वि.आषाढ़ शु० षष्ठी से द्वि.आषाढ़ शु० द्वादशी सम्वत् 2072 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

किस-किस तरह होगी... पृष्ठ- 3
हल्दी सिर्फ मसाला.. पृष्ठ- 4
रानी दुर्गावती... पृष्ठ- 5
UNKNOWN & UNEX.. पृष्ठ- 9
घपलों के दलदल... पृष्ठ- 12

- संस्कृत के मूल्य की जरूरत पूरे विश्व को
- पाकिस्तान के जनक मोहम्मद अली जिन्ना–भारत में अनेक विवादों का जन्मदाता!
- ये पाकिस्तान परस्त भारत विरोधी आजाद क्यों हैं
- योग के बहाने नफरत
- स्पष्ट, साहसिक और दूरदर्शी हो विदेश नीति

वादाखिलाफी पर पीएमओ को नोटिस

प्रधानमंत्री वादा पूरा करें–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

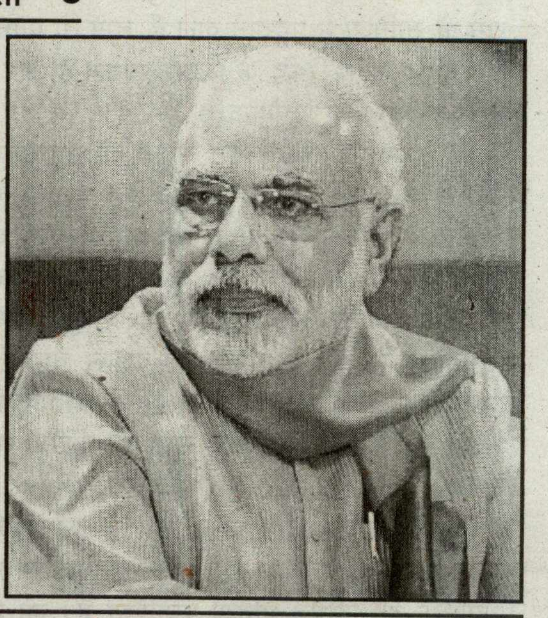

विदेशी बैंकों में जमा काले धन को १०० दिन में वापस लाने और प्रत्येक परिवार के खाते में १५.१५ लाख रुपये जमा कराने का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का वादा न पूरा होने पर प्रधानमंत्री कार्यालय को एक नोटिस भेजा गया है। नोटिस संबंधित व्यक्ति के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू करने से पहले की प्रक्रिया है। तहसीन पूनावाला ने अपने वकील जितेन्द्र गुप्ता के माध्यम से पीएमओ को आगाह किया है कि यदि नोटिस प्राप्त होने के १५ दिन के भीतर इसका जवाब नहीं दिया गया तो वह कानूनी कार्रवाई के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाएंगे। नोटिस की प्रतियां केंद्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली, निर्वाचन आयोग और भारतीय जनता पार्टी अध्यक्ष अमित शाह शेष पृष्ठ 11 पर

यूनेस्को के विरासत टैग की दौड़ में शामिल हो सकती है दिल्ली

दिल्ली को मिले वैश्विक विरासत का दर्जा–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

यूनेस्को द्वारा दिए जाने वाले वर्ल्ड हेरीटेज सिटी वैश्विक विरासत शहर के दर्जे के लिए दिल्ली इस साल होड़ नहीं कर रही। लेकिन संरक्षकों का मानना है कि इस ऐतिहासिक शहर के लिए सबकुछ खत्म नहीं हुआ है और यह अगले साल इस वैश्विक दौड़ में शामिल हो सकती है। कुछ माह पहले केंद्र ने यूनेस्को वर्ल्ड हेरीटेज सिटी के लिए दिल्ली का नामांकन वापस लेने का फैसला करते हुए कहा था कि यदि यह प्रतिष्ठित तमगा दिल्ली को मिल जाता है तो राष्ट्रीय राजधानी में अवसंरचना संबंधी कार्यों को करने

पर बहुत से प्रतिबंध लगा दिए जाएंगे। जर्मनी के बर्न में वर्ल्ड हेरीटेज कमेटी के चालू सत्र में फिलहाल विश्व भर से आए ३८ नामांकनों का आकलन किया जा रहा है। ये नामांकन इस वैश्विक संस्था की विरासत सूची में शामिल होने के लिए आए हैं। आईएनटीएसीएच के दिल्ली चौप्टर के संयोजक, ए जी के मेनन ने बताया दिल्ली इस साल भले ही इस दौड़ में न हो लेकिन हमें अभी भी यकीन है कि दिल्ली ने यह बाजी पूरी तरह से खोई नहीं है। तकनीकी तौर पर देखा जाए, तो नामांकन वापस नहीं लिया गया है। यह एक स्थगन है। इसलिए अगले साल, हम दोबारा इस दौड़ में शामिल हो सकते हैं लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि केंद्र इस पर कितना सक्रिय होगा। वर्ल्ड हेरीटेज कमेटी के ३९वें सत्र की शुरूआत २८ जून को हुई और इसका अंत आठ जुलाई को होगा। इसके बाद नतीजों की घोषणा की जाएगी। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि भारत की राजधानी दिल्ली को वैश्विक विरासत शहर का दर्जा मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि दिल्ली दुनिया के प्राचीनतम शहरों में से एक है। यहां कई विरासतें अति महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक हैं। इसलिए वैश्विक शहर का दर्जा दिलाने के लिये केन्द्र सरकार को जोरदार पहल करनी चाहिए।

भगवान राम के अनूठे भक्त हनुमान!

मेरे राम सर्वत्र विराजित रहते हैं। इसीलिए मैं इन मनको में भगवान राम के दर्शन करने के लिए ही तोड़ रहा हूं। इस पर लक्ष्मण ने चुटकी ली कि क्या आपके कलेजे में भी राम छिपे हैं? इतना सुनते ही हनुमान ने भगवान राम का स्मरण कर अपने नाखूनों से अपनी छाती फाड़ कर कलेजा दिखा दिया। जिसमें राम और सीता विराजित दिखाई दिये तो सभी हनुमान की राम भक्ति के सामने नतमस्तक हो गए। हनुमानजी की उपासना यूं तो सभी सनातनी करते हैं। लेकिन हनुमान के ब्रह्मचारी होने के कारण युवाओं में हनुमान की भक्ति सिर चढ़कर बोलती है। अखाड़ों की स्थापना भी हनुमान जयन्ती के दिन किये जाने की परम्परा है। इस दिन हनुमान जी के विग्रह पर सिन्दूर लगाकर हनुमान चालीसा का पाठ करने से हनुमान अपने भक्तों पर प्रसन्न होते हैं। हनुमान जयन्ती पर लड़कों को लड्डू बांटने से शारीरिक कष्ट दूर होता है और आयु बढ़ती है। हनुमान जयन्ती पर हनुमान जी की विधि विधान से पूजा करके घड़ा और आटा दान करने से हनुमान जी की कृपाप्राप्त हो जाती है।

हनुमानजी की पूजा संसार भर में आदिकाल से होती रही है। देश–विदेश में जगह–जगह हनुमान के विग्रह प्रतिष्ठित है। जहां हनुमान जी के दर्शन करने और पूजा–अर्चना के लिए दूर–दूर से श्रद्धालु आते हैं। हनुमान जी का ऐसा ही एक विग्रह प्रसिद्ध शुकतीर्थ शुक्रताल में प्रतिष्ठित है। यहां हनुमान जी के विराट विग्रह स्वरूप में सात सौ करोड़ राम नाम समाहित किये गए हैं। हनुमान कापावन चरित्र, उपनिषद, शिव पुराण, शतरूद्र संहिता, वाल्मीकि रामायण, रामचरित मानस में देखने को मिलता है। ज्ञानियों में अग्रणी माने जाने वाले भगवान राम के परमभक्त हनुमान कलिमल ग्रसित जीवन को श्री राम के सानिध्य में पहुंचाने वाले हैं, तभी तो पवन पुत्र हनुमान भगवान राम की कृपा से सिद्धि के प्रत्यक्ष स्वरूप हैं और राम नाम जपने वाले भक्तों के संरक्षक व पोषक हैं।

भगवान राम के इन सेवक की उपासना किसी भी शास्त्रोक्त विधि से करें। उसका फल सच्चिदानन्द परम ब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति ही होता है। पवनपुत्र हनुमान की अनूठी लीला के दर्शन शुक्रताल के हनुमतधाम में होते हैं। उ० प्र० के मुजफ्फरनगर जनपद के शुक्रताल में गंगा किनारे स्थित चौदह हजार वर्गफुट क्षेत्रफल में फैले इस हनुमतधाम में ३६०० वर्गफुट के विशाल चबुतरे पर ६४ फुट ३ ईंच ऊंचाई की विशालकाय हनुमान प्रतिमा प्रतिष्ठित है। जिसमें हनुमान प्रतिमा के शिख से नख तक सात सौ करोड़ राम नाम समाहित है। जिनका वजन १४ टन और क्षेत्रफल १००५० घनफुठ है। अत्यन्त चिताकर्षक नयनाभिराम प्रसन्न मुद्रा में हनुमानजी के दर्शन मात्र से सुखद अनुभूति होती है। इस अनूठे हनुमतधाम में विश्वभर की वानर प्रजातियों की विभिन्न मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। जो हनुमानजी के विभिन्न रूपों का बोध कराते हैं। हनुमतधाम के प्रवेश द्वार पर प्रतिष्ठित इन वानर मूर्तियों में सीलोन में पाया जाने वाला बेबी कपि, जापान का स्नो, इन्डोनेशिया का कपि, भारतीय कपि, चाइना का डाक लंगूर, इथोपिया का गिलाडा बबून, सैनडियागो का हीमोहनीज गौरिल, ब्ल्यू का प्रौसीमैन, उत्तर अफ्रीका का अर्द्ध हरित, अमेरिका का स्कवैरिल व दीर्घपुच्छ, ब्राजील का दीर्घबाहु, अफ्रीका का ब्रुश बेंबीज, जावा बोर्निया और सुमात्रा का जिब्बान आदि कपि मूर्तियां हनुमान जी की महिमा का वर्णन करती नजर आती है।

इसी प्रकार राजस्थान का प्रतिष्ठित हनुमान जी का बाला जी मन्दिर, हरिद्वार के गाधारोना का प्रसिद्ध हनुमान मन्दिर, मध्य प्रदेश के छिन्दवाड़ा का विशालकाय हनुमान मन्दिर, औरंगाबाद का भद्र मारूति मन्दिर जिसमें हनुमान जी विश्राम मुद्रा में विराजमान है। इसी कारण यहां महिलाओं का प्रवेश निषेध है। हनुमान का विश्राम मुद्रा में एक मन्दिर इलाहाबाद के संगम तट पर भी प्रतिष्ठित है। जहां पूजा अर्चनाके लिए हनुमान भक्त दूर–दूर से आते हैं। हालांकि शायद ही ऐसा कोई शहर या गांव हो, जहां हनुमान जी की मूर्ति या मन्दिर न हो, क्योंकि जहां भी भगवान राम हैं, वहां उनके परम सेवक हनुमान न हो, यह हो ही नही सकता। सच पूछिए तो राम की साधना से पहले हनुमान की साधना की जाए तो राम सहज ही प्रसन्न हो जाते हैं। जो परमात्मा प्राप्ति का सबसे सहज मार्ग है। **डॉ श्रीगोपाल नारसन**

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह कुछ लोगों को कार्य व व्यवसाय को लेकर मन में उथल–पुथल मची रह सकती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं है। छात्र किसी अनहोनी के भय से परेशान रह सकते हैं। नयें लोगों को कैरियर के प्रति सकारात्मक रूख अख्तियार करने की आवश्यकता है।

वृष - इस सप्ताह स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। जहां तक कार्य की बात है। वह अच्छा चलता रहेगा। आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होगा। घर के माहौल में तनाव की संभावना बनी रह सकती है। सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने से मानिसक स्थिति कुछ अच्छी हो सकती है।

मिथुन - इस सप्ताह कुछ लोगों के व्यवसाय में थोड़ा सा उतार–चढ़ाव बना रहेगा। जो लोग नौकरी या फिर किसी नये कार्य की तलाश में है, उन्हें अभी और भटकना पड़ेगा क्योंकि उनके लिए यह समय अनुकूल नहीं है। नौकर–चाकरों से सावधान रहें एवं प्रेम के प्रति सतर्कता बरतें।

कर्क - इस सप्ताह जो लोग किसी कानूनी विवाद में फंसे हुए हैं उन्हें विशेष सावधानी की आवश्यकता है। आपको ब्याज कर्ज के लेनदेन से बहुत दूर रहना चाहिए। आय व व्यय में समानता की स्थिति बनी रहेगी जिस कारण मन चिन्ताग्रस्त रह सकता है।

सिंह - यह सप्ताह नई योजनाओ में वृद्धिं करायेगा। जिन लोगों का धन कही फंसा हुआ है, उन्हें प्राप्त होने की सम्भावना है। कुछ लोगों का धार्मिक कार्यों पर धन का व्यय होगा तथा धार्मिक यात्राओं के योग बनेंगे। परिवार में बड़ों को स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं है।

कन्या - इस सप्ताह रोजगार के नये अवसर प्राप्त होंगे। इस समय कुछ लोगों को वाइरल हो जाने की आशंका नजर आ रही है, अतः सावधानी बरतें। सामाजिक कार्यों में की गई मेहनत से भविष्य में पद प्रतिष्ठा आदि का लाभ होगा। छात्रों के उत्साह में वृद्धि होगी।

तुला - इस सप्ताह जिन लोगों का धन कही फंसा हैं उसे प्राप्त होने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। जो लोग साझे व सहयोग का कार्य करते हैं, उन्हें लेंन–देन में सावधानी बरतनी होगी। कुछ लोगों का धार्मिक कार्यो में धन खर्च होगा।

वृश्चिक - इस सप्ताह जो लोग किसी समस्याओं में उलझे हैं, उन्हें राहत मिलेगी। छात्रों को विवादों से बचना ही हितकर रहेगा। आर्थिक स्थिति पहले की अपेक्षा मजबूत होगी। स्वास्थ्य के मामले में यह समय अच्छा नहीं है।

धनु - इस सप्ताह नौकरी वाले व्यक्ति अपने बॅास से सावधानी बरतें। कर्ज व ब्याज आदि के लेन–देन में सावधानी बरतें। नयें कार्यो में उन्नति होने के आसार हैं। विवाद में विजय मिलेगी। नौकर चाकर से सावधान रहें।

मकर - इस सप्ताह कुछ लोगों को मानसिक विकार घेरे रहेंगे। जो लोग कब्ज या पाइल्स के रोगी हैं, उनकी समस्या बढ सकती है। आपको आलस्य सतायेगा फिर भी अपने कार्य क्षेत्र में किये गये कार्यो में सफलता प्राप्त होंगी। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें अन्यथा कोई दुर्घटना हो सकती है।

कुम्भ - इस सप्ताह आप के बहुत सारे रूके कार्य शीघ्र ही पूरे हो जायेंगे। पारिवारिक सदस्यों के प्रति नकारात्मक रवैया रखने से दूरियां और बढ़ सकती है। बहुत से लोगों को धार्मिक यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। पत्नी के प्रति उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते हैं, परन्तु मकान व वाहन आदि से सम्बन्धित लाभ होने की सम्भावना है।

मीन - इस सप्ताह कुछ लोगों की आमदनी में वृद्धि होगी लेकिन जितना तेजी से पैसा आयेगा। उतनी ही तेजी से खर्च भी होगा। घरेलू मामलों में तनाव की स्थिति रहेगी। इस समय एसीडिटी तथा मानसिक तनाव बढ़ेगा। व्यापारी वर्ग के लिए यह माह अनुकूल रहेगा। **पं० दीनानाथ तिवारी**

श्रीमद्भगवत गीता

अकीर्ति चापि भूतानि कथियिष्यन्ति तेऽव्ययाम्।
सम्भावितस्य चाकीर्ति र्मरणादतिरिच्यते।।

तथा सब लोग तेरी बहुत काल तक रहने वाली अपकीर्तिका भी कथन करेंगे और माननीय पुरूष के लिये अपकीर्ति मरण से भी बढ़कर है।।३४।।

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम्।।

और जिनकी दृष्टि में तू पहले बहुत सम्मानित होकर अब लघुता को प्राप्त होगा, वे महारथी लोग तुझे भय के कारण युद्ध से हटा हुआ मानेंगे।।३५।।

अवाच्यवादांच्श्र बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम्।।

तेरे वैरी लोग सामर्थ्य की निन्दा करते हुए तुझे बहुत से न कहने योग्य वचन भी कहेंगे, उससे और अधिक दुःख और क्या होगा?।।३६।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 22 जुलाई से 28 जुलाई 2015 तक

अध्यक्षीय

किस-किस तरह से छलनी होगी आत्मा

भारत इस समय बहुत बुरे दौर से गुजर रहा है। तमाम प्रयासों के बाद भी समाज में महिलाओं के प्रति नजरिया बदल नहीं पा रहा है। न जाने यह समाज किस किस तरह से महिलाओं की आत्मा को छलनी करता रहेगा। बलात्कार की शिकार महिला को बलात्कार करने वाले से समझौता करना पड़े तो यह उसकी आत्मा को दोबारा छलनी करने जैसा होता है। ऐसा करने में स्त्री के सम्मान को फिर से चोट पहुंचती है। लेकिन समाज की सामंती मानसिकता कहें या पुरुष वर्चस्व की सोच, स्त्री को उसकी देह से परे जाकर समझने की कोशिश ही नहीं की जाती। बलात्कार का शिकार होने पर स्त्री ने अपनी इज्जत ही नहीं गंवाई, बल्कि सम्मान के साथ जीने का हक भी खो दिया, ऐसी सोच समाज में व्याप्त है। इसलिए अगर कोई बलात्कारी सजा से बचने के लिए समझौते की पहल करता है,. तो उसे पीड़िता का सौभाग्य करार देने वालों की समाज में कमी नहीं है। पीड़िता के लिए यही उचित समझा जाता है कि वह बलात्कारी से विवाह कर ले या वित्तीय समझौता कर ले। यह विचार नहींकिया जाता कि जिस व्यक्ति ने किसी स्त्री की अस्मिता को तार–तार किया है, उसके शरीर के साथ–साथ उसके मन को जख्म दिया है। वह किस तरह उसके साथ कोई संबंध बना सकती है, या अपनी अस्मिता गंवाने की भरपाई कुछ धनराशि लेकर कर सकती है। पूर्व में अनेक मामले देखे गए हैं जब बलात्कारी द्वारा पेश की गई समझौते की पहल को स्वीकार कर लिया गया। हाल ही में मद्रास उच्च न्यायालय ने एक नाबालिग से बलात्कार के मामले में आश्चर्यजनक फैसला सुनाते हुए आरोपी को जमानत दी, ताकि पीड़िता के साथ सुलह की प्रक्रिया आसान हो सके। पीड़िता के मां–बाप की मृत्यु हो चुकी है और बलात्कार के बाद वह मां बन गई थी। आरोपी को निचली अदालत ने ७ साल की कैद और दो लाख रुपए के जुर्माने की सजा सुनाई थी। तब उसने उच्च न्यायालय में समझौते के लिए गुहार लगाई थी। आरोपी को जमानत मिल गई और एक लाख की एफडी पीड़िता के नाम करने का आदेश मिला। मुमकिन है इस एक लाख की राशि से और भविष्य के लिए किसी तरह के समझौते से उस पीड़िता को फौरी राहत मिले, किंतु जो चोट उसकी अस्मिता को पहुंची क्या उस पर कोई भी समझौता मलहम का काम कर सकता है। यह सवाल बना रहेगा। मद्रास उच्च न्यायालय के बाद इसी तरह का एक फैसला मध्यप्रदेश का आया। जिसमें बलात्कार के आरोपी की सजा कम कर दी गई। सर्वोच्च न्यायालय ने इस तरह के समझौते या उसके प्रयास की कड़ी आलोचना करते हुए एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा कि जिस तरह अदालतें ऐसी सुलह के आदेश देती हैं वो ना सिर्फ गैरकानूनी हैं, बल्कि उनसे महिलाओं की गरिमा को ठेस पहुंचाती हैं। अपना फैसला सुनाते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि बलात्कार समाज के खिलाफ एक अपराध है, ये दो पक्षों के बीच का मामला नहीं है जो आपस में सुलह कर लें। अदालत ये नहीं जान सकती कि ऐसी सुलह वास्तविक है, क्योंकि पीड़िता दबाव में या जीवन भर के सदमे से बचने की कोशिश में सुलह को मजबूर हो सकती है। अदालत ने कहा स्त्री का शरीर उसका अपना मंदिर होता है। स्त्री की गरिमा उसकी आत्मा का अटूट हिस्सा होती है, जिस पर दाग नहीं लगाया जा सकता। सर्वोच्च न्यायालय ने जो कहा उसे अगर समाज ने पहले समझा होता या अब भी समझ ले तो स्त्रियों के खिलाफ होने वाले अपराधों में काफी कमी आ सकती है। अदालत का यह फैसला निश्चित रूप से महिला सशक्तीकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकता है। अगर बलात्कारी को पीड़िता के साथ समझौता करने या विवाह करने की अनुमति देने पर सर्वोच्च न्यायालय नाराजगी नहीं जताता तो इस देश में पहले से असुरक्षित स्त्रियों का जीवन और खतरे में होता। निर्भया जैसे जघन्य अपराध के बाद भी हमारे देश में न बलात्कार की घटनाएं कम हुई, न स्त्रियों की सुरक्षा व्यवस्था मजबूत हुई, न समाज की सोच में कोई बदलाव आया। ऐसे में बलात्कार के बाद समझौते के तहत अपराध को कमतर कर आंकने की प्रवृत्ति महिलाओं के लिए घातक साबित होती। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा महिलाओं के सम्मान के साथ किसी भी तरह के समझौते से इन्कार स्वागत योग्य कदम है।

राष्ट्रीय उद्‌बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

संस्कृत के मूल्य की जरूरत पूरे विश्व को

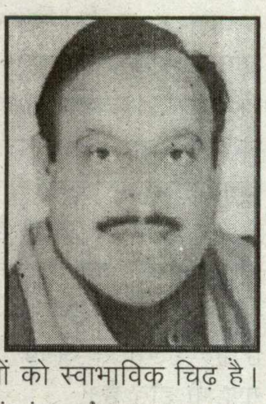

भारत ने संस्कृत के सबसे पुरानी जीवित भाषा होने और अनेक मानवीय समस्याओं का हल संस्कृत से होने का दावा क्या किया, बुद्धिजीवियों के एक धड़े को यह बात अपच हो गई। जहां कहीं भारत और उसके भारत तत्व का समावेश है, उससे कुछ लोगों को स्वाभाविक चिढ़ है। यदि संस्कृत और उसके साहित्य को वे जरा भी जान–पढ़ लें तो उन्हें संस्कृत का महत्व समझ आ जाए। १४ सितंबर १९४६ को डॉ० भीमराव अंबेडकर और प्रो. नाजिरुद्दीन अहमद ने संस्कृत को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का सुझाव संविधान सभा को दिया था। इस सलाह के पीछे उन दोनों का एक खास तर्क था कि राष्ट्रभाषा का दर्जा पाने की पात्रता सारी भारतीय भाषाओं की जननी मानी जाने वाली संस्कृत में ही हो सकती है। इन नेताओं के जेहन में इसके पीछे यही मंशा थी कि इससे स्वतंत्र भारत का भाषाई आधार पर बंटवारा नहीं होगा। कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत को एक भाषाई सूत्र में पिरोने का काम संस्कृत ही कर सकती है। किसी भी भारतीय के लिए संस्कृत को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकारने में कोई कठिनाई न तो पहले थी और न ही आज होगी। हकीकत में सारी भारतीय भाषाएं संस्कृत के निकट ही हैं। ये भाषाएं हिमालय से निकली नदियों की भांति अपना स्रोत संस्कृत में खोजती हैं। सारे भारत की भाषाएं संस्कृत पर वैसे ही टिकी हैं जैसे किसी बेल का सहारा कोई वृक्ष हो। कम ही लोग इस ओर ध्यान देते हैं कि डॉ० अम्बेडकर ने खुद वेदों का अध्ययन किया था। उन्होंने एक निष्कर्ष निकाला कि भारत में एक महान सभ्यता रही है। संस्कृत उसकी वाहक है। उसमें धर्म और दर्शन का मेल है। वहां धर्म शब्द का प्रयोग साध्य और साधन, दोनों रूपों में मिलता है। लेकिन पद्धति कभी मंजिल नहीं होती। पद्धति की कट्टरताएं टकराव पैदा करती हैं। इस टकराव का सबसे बड़ा समाधान संस्कृत के पास है, क्योंकि उसका यह सिद्धांत है कि आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत अर्थात जो तुम्हें अपने लिए ठीक न लगे, उसे दूसरों के लिए न करो। संस्कृत में छिपे मूल्य इस परिमाण में आंके जा सकते हैं जिनकी जरूरत आज हरेक राष्ट्र, समाज, धर्म, पंथ, परंपरा और भाषा को है। २००६ में यूनेस्को ने मानव सभ्यता का सबसे पुराना लिखित दस्तावेज ऋग्वेद को माना। स्पष्ट है कि जब ऋग्वेद सर्वप्राचीन ग्रंथ है तो इस हिसाब से उसकी भाषा संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है। संस्कृत सनातन सत्ता का सत्य है। इसका इतिहास किसी से पूछने की जरूरत नहीं है। यह सनातन है। ठीक उसी तरह जैसे सनातन धर्म है। २१ जून को मनाया गया विश्व योग दिवस इसका प्रमाण है। संस्कृत पूरी मानवता को जोड़ने का सामर्थ्य रखती है, क्योंकि वह किसी धर्म, राष्ट्र या जाति के बंधन में नहीं बांधी जा सकती। यह जरूर है कि भारत में संस्कृत के लोकभाषा होने की जब बात चलती है तो यह समझ लेना चाहिए कि मुगलों के आने के बाद भारतीय संस्कृति में जो अवरोध आया उसने अपनी काली छाया अभी तक बना रखी है। संस्कृत ही है जो पूरे समाज को ऊर्जावान बनाने में समर्थ है। संस्कृत के उपकरण वही हैं जो वेद परंपरा से चले आ रहे हैं। वे लोगों को आस्थावान बनने की प्रेरणा दे रहे हैं। संस्कृति का मर्म समझा रहे हैं। संस्कृत के बारे में दो नजरिये हैं। एक वर्ग वह है जो संस्कृत में सब कुछ ठीक ही देखता है। इस वर्ग की रोजी–रोटी संस्कृत से चलती है। उनका तर्क है कि संस्कृत सनातन है, लेकिन ऐसे भाषण का प्रभाव उस सभा तक ही सीमित रहता है जब तक वक्ता बोलता रहता है। दूसरा समूह उन लोगों का है जिन्हें संस्कृत में दोष ही नजर आते हैं। वे गली के कीचड़ और धूल–मिट्टी को संस्कृत के माथे मढ़ना चाहते हैं। ऐसे में वे संस्कृत के व्याकरण तक को ललकार देते हैं। परंतु उन्हें समझना चाहिए कि इस मजबूत व्याकरण के कारण ही संस्कृत विश्व की एकमात्र ऐसी भाषा भी है जो पिछले लगभग ८ हजार वर्षों से एक ही रूप में लिखी–पढ़ी–बोली जा रही है। हां, यह जरूर है कि आज संस्कृत उपेक्षित सी है। इसके बारे में अज्ञान है। इसकी बड़ी भारी विडंबना यह है कि इसकी हर शाखा खुद तना बन गई। शाखाओं ने वृक्ष का रूप ले लिया और मूल मरता चला गया। फिलहाल उसके खंडहर ही दिखाई पड़ते हैं। संस्कृत की इस दुर्दशा के लिए सरकार के बजाय संस्कृत के भीतरी लोग भी जिम्मेदार हैं। हकीकत में संस्कृत तो गंगा है, जो वाल्मीकि और व्यास को पैदा करती है। संस्कृत का यही चरित्र इसका भविष्य में कल्याण करेगा। संस्कृत, जब भी आबाद होगी तो सामाजिक समरसता के आंदोलन का नया आकार लेगी।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

हल्दी सिर्फ मसाला ही नहीं औषधि भी है

आपकी रसोई में रखे बहुत से मसालों के बीच एक मसाला है हल्दी, जिसके बिना आपका भोजन नीरस एवं बदरंग हो जाएगा। विश्व में हल्दी की लगभग सत्तर किस्में चलन में हैं। इनमें से लगभग तीस किस्में हमारे देश में ही उगाई जाती हैं। हल्दी हमारे भोजन का तो एक प्रमुख अंग है ही लेकिन क्या आप जानते हैं कि हल्दी में अनेक औषधीय गुण भी होते हैं।

अदरक की तरह हल्दी भी पौधों की कन्द की गांठों से प्राप्त होती है। एक विशेष क्रिया के द्वारा हल्दी में पर्याप्त रंग तथा गंध उत्पन्न की जाती है। पहले गांठों को पानी में तब तक उबाला जाता है जब तक कि वह नरम न हो जाए। चटक रंग के लिए पानी को सोडा या चूना डालकर क्षारीय कर लिया जांता हैं अच्छी तरह से पकी हुई गांठों को पालिश किया जाता है तो इन्हें पीस कर हल्दी पाउडर बना लिया जाता है। करक्यूमिन नामक पिगमेण्ट के कारण हलदी का रंग पीला होता है।

१०० ग्राम हल्दी में लगभग ६.३ ग्राम प्रोटीन होता है। जबकि ऊर्जा लगभग ३४६ किलो कैलोरी होती है। परन्तु पोषण की दृष्टि से हल्दी का ज्यादा महत्व नहीं है क्योंकि दिन भर में हल्दी की जो मात्रा हमारे भोजन में प्रयोग की जाती है वह बहुत ही थोड़ी लगभग २ से ५ ग्राम ही होती है। हल्दी एक महत्वपूर्ण औषधि है। परन्तु अकसर लोग जानकारी के अभाव के कारण इससे पूरा लाभ नहीं उठा पाते।

वात, पित्त तथा कफ तीनों प्रकार के विकारों को ठीक करने की शक्ति हल्दी में होती है। गरम दूध में हल्दी डालकर पिलाने से रोगी को खांसी से आराम मिलता है। हल्दी की छोटी सी गांठ को यदि सेंक कर रात को सोते समय मुंह में रखा जाए तो भी जुकाम–खांसी में लाभ मिलता है। दो ग्राम हल्दी के चूर्ण में थोड़ा सा सेंधा नमक मिलाकर, मुंह में डालकर ऊपर से गर्म पानी पीने से खांसी का प्रकोप नष्ट हो जाता है। रात को गर्म दूध में हल्दी डालकर पीने से दबी आवाज खुल जाती है और गला भी हल्का हो जाता है। इसी दूध में एक चम्मच घी मिला देने पर खांसी जुकाम पूरी तरह ठीक हो जाते हैं। बढ़े हुए टांसिल पर हल्दी लगाने से लाभ मिलता है।

सिर दर्द में भी हल्दी से आराम मिलता है। इसके लिए पिसी हुई हल्दी को पानी में उबाल कर उसकी भाप को सांस द्वारा

अंदर खींचना चाहिए। एक कप चाय में चुटकी भर हल्दी मिलाकर पीने से सिरदर्द के साथ–साथ कमर दर्द में भी आराम मिलता है।

हल्दी अपने आप में बहुत अच्छी ऐन्टिसेप्टिक भी है। किसी भी घाव पर हल्दी और गरम तेल लगाने से वह जल्दी ठीक हो जाता है। यह तो सभी जानते हैं कि गुम चोट लगाने पर पिसी हल्दी को गर्म दूध में मिलाकर सेवन करना चाहिए साथ ही हल्दी को चने में मिलाकर ताजा चोट पर लगाने से बहता खून बंद हो जाता है। यदि चोट लगने पर खून जम जाए तो हल्दी को पानी में पीसकर गर्म करके चोट पर लगाना चाहिए। हल्दी की पुल्टिस बनाकर सूजे हुए भागों पर लगाने से आराम मिलता है, मोच आने पर हल्दी का लेप पीड़ित अंग को लाभ पहुंचाता है। नमक मिली हल्दी को मंजन की तरह प्रयोग करने से दांतों का पीलापन तो दूर होता ही है, मसूढ़ों में भी मजबूती आती है। बराबर मात्रा में केवल नमक और हल्दी का सेवन पेट की गैस दूर करता है। हिचकी दूर करने के लिए चुटकी भर हल्दी पानी में मिलाकर लें। बराबर मात्रा में (लगभग पांच–पांच ग्राम) हल्दी और उड़द की दाल का पाउडर जलती चिलम में रखकर कश खींचने से हल्दी बंद हो जाती है।

गठिया रोग में हल्दी के लड्डू विशेष लाभ देते हैं इसके लिए आग में भुनी हुई हल्दी की गांठों को घिसकर उसमें गुड़ मिलाकर लड्डू बनाएं। आप चाहें तो इसमें काजू भी मिला सकते हैं। इन लड्डुओं का सेवन प्रतिदिन सुबह नींबू या तुलसी की चाय के साथ करना चाहिए।

हल्दी में विष हरने का गुण भी पाया जाता है। किसी विषैले कीड़े के काटने पर तुरन्त हल्दी को घिसकर उसके लेप में नींबू का रस मिलाकर प्रभावित अंग पर लगाया जाना चाहिए। गर्भवती महिलाएं यदि नवें मास में लगभग पांच ग्राम हल्दी पीसकर दूध के साथ सेवन करें तो उन्हें प्रसव कष्ट कम होगा तथा साथ ही बच्चे का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

त्वचा के विभिन्न विकारों को दूर करने के लिए हल्दी श्रेष्ठ मानी जाती है। त्वचा पर होने वाले फोड़े–फुन्सी मुख्यतः रक्त की अशुद्धि के कारण होते हैं। रक्त की शुद्धि के लिए हल्दी युक्त जल में शहद मिलाकर उसका सेवन करना चाहिए। इस मिश्रण को बनाकर संग्रहित किया जा सकता है। इसका सेवन भोजन के लगभग आधा घंटा बाद करना चाहिए। नियमित रूप से इसका सेवन विभिन्न त्वचीय विकारों के होने की संभावना कम कर देता है। यदि फोड़े–फुन्सियों के कारण, त्वचा पर गड्ढे पड़ गए हों तो हल्दी का लेप लगाने से जल्द ही नई त्वचा आ जाती है। हल्दी की गांठ का गाढ़ा लेप एग्जिमा से भी राहत दिलाता है। गर्मियों में घमौरियां सभी को परेशान करती हैं। आधा किलो कच्ची हल्दी को गांठों को उबालकर उसमें लगभग २०० ग्राम शहद मिलाकर कांच के बर्तन में बंद करके रखें। इस मिश्रण का सेवन फायदेमंद होता है। किसी भी फल के रस में दो–तीन चम्मच हल्दी मिलाकर लेने से भी शरीर की उष्णता शांत होती है। भोजन को मनमोहक रंग देना हल्दी का महत्वपूर्ण कार्य है परन्तु इसके औषधीय गुण उसे साधारण मसालों की श्रेणी से कहीं ऊपर उठा देते हैं यकीनन आप उसे रसोईघर का डॉक्टर कह सकते हैं।

सावधान ! आ रहा है 'स्वाइन फ्लू'

डॉ. हर्षवर्धन

फ्लू को २००१ एच १ सन। टाइप ए 'इन्फ्लूएंजा' के नाम से जाना जाता है। यंह मानवीय रोग है। यह व्यक्तियों द्वारा व्यक्तियों में फैलने वाला रोग है।

लक्षण

स्वाइन फ्लू साधारण फ्लू की तरह ही होता है। इसमें बुखार, खाँसी, गले का खराब होना, नाक बहना, शरीर में दर्द, ठंड लगना, थकावट के होने जैसी परेशानियाँ उत्पन्न हो सकती है। अधिकांश लोगों में दस्त तथा उल्टी की भी शिकायतें हो सकती हैं। इन लक्षणों के होने पर भी 'स्वाइन फ्लू के होने की सही स्थिति संबंधित जाँच कराने के बाद ही पता चलती है। बच्चों में निम्नलिखित लक्षण दिखाई देने पर तुरन्त चिकित्सा की जरुरत होती है– १

■ साँस में तकलीफ अथवा तेजी से चलने पर।

■ त्वचा का रंग नीला अथवा भूरा पड़ने पर।

■ पर्याप्त तरल लेने में असमर्थता।

■ बहुत अधिक अथवा लगातार उल्टी के होने पर ।

■ बच्चे में अधिक चिड़चिड़ापन परिलक्षित हो रहा हो तथा एक ही अवस्था में रहने में असमर्थ दिखाई दे रहा हो।

■ बुखार हो तथा अचानक मानसिक अथवा व्यवहार में परिवर्तन दिखाई दे रहा हो।

■ व्यस्कों में निम्नलिखित लक्षण दिखाई देने पर तुरन्त चिकित्सा की जरूरत होती है।

■ साँस में तकलीफ अथवा जल्दी–जल्दी साँस का आना।

■ सीने अथवा पेट में दर्द अथवा दबाव।

■ अचानक चक्कर आना।

■ बहुत अधिक अथवा लगातार उल्टी का होना।

■ फ्लू की तरह ही संकेत जिसमें सुधार हो रहा हो लेकिन तेज बुखार अथवा खाँसी के साथ पुनः शुरु हो गया है।

बचाव

■ खाँसने अथवा छींकने के उपरांत हाथ साबुन से धोयें।

■ स्वाइन फ्लू से संक्रमित व्यक्ति से कम से कम ६ फीट की दूरी बनाये रखें।

■ हाथ से मुँह, नाक और आँख को छूने से परहेज करें। यदि ऐसा सम्भव न हो तो दोनों हाथों को साफ रखें।

■ यदि फ्लू के लक्षण–बुखार, खाँसी, गले में खराबी आदि दिखाई दे रहे हों तो लक्षण प्रारम्भ होने से एक सप्ताह तक विश्राम करें अथवा २४ घंटे तक लक्षण न दिखाई देने तक विश्राम करें।

■ स्वाइन फ्लू से संक्रमित व्यक्ति से सम्पर्क में आने की अवस्था में फेस मास्क का इस्तेमाल करें।

■ स्वाइन फ्लू से संक्रमित अथवा संक्रमण संभावित व्यक्तियों को दूसरे की सुरक्षा हेतु 'फेस मास्क' का इस्तेमाल करना चाहिये।

शेष पृष्ठ 11 पर

कैंसर से लड़ने में मददगार है ऑक्सीजन

शरीर में ऑक्सीजन की अतिरिक्त मात्रा कैंसर से लड़ने में भी सहायक हो सकती है। वैज्ञानिकों ने एक ताजा शोध में यह दावा किया है। इस शोध से कैंसर के उपचार की दिशा में क्रांतिकारी बदलाव आने की उम्मीद है। शोध में कहा गया है कि अतिरिक्त ऑक्सीजन शरीर में ट्यूमर से लड़ने वाली कोशिकाओं को जाग्रत करने की क्षमता रखती है। शोधकर्ताओं ने कहा कि वातावरण की २१ फीसदी ऑक्सीजन की तुलना में ४० से ६० फीसदी ऑक्सीजन को सांस के जरिए लेना बेहद लाभकारी है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि करीब ३० सालों के अध्ययन से सामने आया यह निष्कर्ष कैंसर से लड़ने में कारगर हो सकता है। कैंसर से दुनिया भर में सालाना ८० लाख लोगों की मौत हो जाती है। सांस के जरिए अतिरिक्त ऑक्सीजन लेने की इस प्रक्रिया से कैंसर इम्यूनोथैरेपी में और बेहतर परिणाम मिलने की उम्मीद जागी है।

रानी दुर्गावती

महारानी दुर्गावती कालिंजर के राजा कीर्तिसिंह चंदेल की एकमात्र संतान थीं। महोबा के राठ गांव में १५२४ ई० की दुर्गाष्टमी पर जन्म के कारण उनका नाम दुर्गावती रखा गया। नाम के अनुरूप ही तेज, साहस, शौर्य और सुन्दरता के कारण इनकी प्रसिद्धि सब ओर फैल गयी। दुर्गावती के मायके और ससुराल पक्ष की जाति भिन्न थी लेकिन फिर भी दुर्गावती की प्रसिद्धि से प्रभावित होकर राजा संग्राम शाह ने अपने पुत्र दलपत शाह से विवाह करके, उसे अपनी पुत्रवधु बनाया था। दुर्भाग्यवश विवाह के चार वर्ष बाद ही राजा दलपतशाह का निधन हो गया। उस समय दुर्गावती की गोद में तीन वर्षीय नारायण ही था। अतः, रानी ने स्वयं ही गढ़मंडला का शासन संभाल लिया। उन्होंने अनेक मंदिर, मठ, कुएं, बावड़ी तथा धर्मशालाएं बनवाईं। वर्तमान जबलपुर उनके राज्य का केन्द्र था। उन्होंने अपनी दासी के नाम पर चेरीताल, अपने नाम पर रानीताल तथा अपने विश्वस्त दीवान आधारसिंह के नाम पर आधारताल बनवाया।

रानी दुर्गावती के सुखी और सम्पन्न राज्य पर मालवा के मुसलमान शासक बाजबहादुर ने कई बार हमला किया , पर हर बार वह पराजित हुआ। तथाकथित महान मुगल शासक अकबर भी राज्य को जीतकर रानी को अपने हरम में डालना चाहता था। उसने विवाद प्रारम्भ करने हेतु रानी के प्रिय सफेद हाथी (सरमन) और उनके विश्वस्त वजीर आधारसिंह को भेंट के रूप में अपने पास भेजने को कहा....रानी ने यह मांग ठुकरा दी।

इस पर अकबर ने अपने एक रिश्तेदार आसम खां के नेतृत्व में गोंडवाना पर हमला कर दिया। एक बार तो आसफ खां पराजित हुआ, पर अगली बार उसने दुगनी सेना और तैयारी के साथ हमला बोला। दुर्गावती के पास उस समय बहुत कम सैनिक थे। उन्होंने जबलपुर के पास नरई नाले के किनारे मोर्चा लगाया तथा स्वयं पुरुष वेश में युद्ध का नेतृत्व किया। इस युद्ध में ३,०००० मुगल सैनिक मारे गये लेकिन रानी की भी अपार क्षति हुई थी।

अगले दिन २४ जून १५६४ को मुगल सेना ने फिर हमला बोला। आज रानी का पक्ष दुर्बल था, अतः रानी ने अपने पुत्र नारायण को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया। तभी एक तीर उनकी भुजा में लगा, रानी ने उसे निकाल फेंका। दूसरे तीर ने उनकी आंख को बेध दिया, रानी ने इसे भी निकाला पर उसकी नोक आंख में ही रह गयी। तभी तीसरा तीर उनकी गर्दन में आकर धंस गया।

रानी ने अंत समय निकट जानकर वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे, पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अतः रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं। महारानी दुर्गावती ने अकबर के सेनापति आसफ खान से लड़कर अपनी जान गंवाने से पहले प्रदंह वर्षो तक शासन किया था।

जबलपुर के पास जहां यह ऐतिहासिक युद्ध हुआ था, उस स्थान का नाम बरेला है, जो मंडला रोड़ पर स्थित है, वहीं रानी की समाधि बनी है, जहां देश प्रेमी जाकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। जबलपुर में स्थित रानी दुर्गावती यूनिवर्सिटी भी इन्ही रानी के नाम पर बनी हुई है।

जिला बुलन्दशहर से प्राप्त हिन्दू सभावार्ता का शुल्क माह जून 2015

1.	सुभाष चन्द डंग १८/१८७, टीचर्स कॉलोनी बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क २०१५–१६)	150/-
2.	आई० एफ० टी० एम० यूनिवर्सिटी लोधी पुर राजपूत दिल्ली रोड मुरादाबाद–२४४१०२(आजीवन)	1200/-
3.	डा० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद (उ०प्र०) (आजीवन)	1200/-
4.	आई० डी० गुलाटी १८/१८६, टीचर्स कॉलोनी बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क २०१५–१६)	150/-
5.	ललिता प्रसाद शर्मा ३७३, टीचर्स कॉलोनी बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क २०१५–१६)	150/-
6.	इंदिरा गांधी इन्टर कॉलेज ग्राम– कैलावन डाक० शिकारपुर– २०२३६५ जिला–बुलन्दशहर (वार्षिक)	150/-
7.	श्री द्रोणाचार्य डिग्री कॉलेज कालन्दी मार्ग दनकौर (गौतम बुद्धनगर) २०३२०१ (नवीनीकरण शुल्क २०१५–१६)	150/-
8.	आर्य समाज मन्दिर १६–डी, दयानन्द मार्ग नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ०प्र०) (नवीनीकरण शुल्क २०१५–१६)	150/-
	टोटल	3300/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

महंगाई से जन–जन त्रस्त,
गणतंत्र भला यह कैसा?
भ्रष्टाचार चरम सीमा पर,
नेताओं को चाहिए पैसा।।

तुष्टिकरण देश को खा रहा,
अराजकता चरम सीमा पर।
आतंकी साजिश रच रहे,
कानून का उन्हें नहीं डर।।

गणतन्त्र भला यह कैसा?

बलात्कार की घटनाओं से,
अखबार सारे भरे पड़े।
सत्ताधीशों को चिन्ता नहीं,
अहंकारवश जिद पर अड़े।।

पड़ौसी देशों के प्रतिदिन,
हौंसले बुरी तरह बढ़ रहे।
अलगाववादी देशद्रोही
बेखौफ सिर पर चढ़ रह।।

नेता सुखी जनता है दुखी,
गणतन्त्र भला यह कैसा?
लोग ठंड के कारण मर रहे,
लोकतन्त्र भला यह कैसा?

धर्मेन्द्र गोयल

वेदामृत

मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्य इव ततनः।
गाय गायत्रमुक्थ्यम्।। (ऋ० १/३८/१४)

भावार्थ–प्रस्तुत मन्त्र में मनुष्यमात्र के लिए कई सुन्दर शिक्षाओं का समावेश है।

१. प्रत्येक मनुष्य को वेद–मन्त्रों से अपना मुख भर लेना चाहिए। मन्त्रों को पढ़–पढ़कर उन्हें कण्ठस्थ कर लेना चाहिए।

२. वेद पढ़कर जो ज्ञानामृत प्राप्त हो उसे अपने तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए, अपितु जिस प्रकार बादल समुद्र से जल लेकर उसे गम्भीर गर्जन के साथ सर्वत्र बरसा देता है उसी प्रकार मनुष्यों को भी वेदरूपी समुद्र से रत्नों और मोतियों का संचय कर उनका लेखन और वाणी से प्रचार करना चाहिए।

३. वेद में आयुवद्धि के, स्वास्थ्यरक्षा के और प्राणशक्ति को बलिष्ठ बनाने के सहस्त्रों मन्त्र भरे पड़े हैं। शरीर रक्षा के लिए इस प्रकार के मन्त्रों को स्वयं पढ़ना चाहिए और दूसरों को पढ़ाना चाहिए।

जिला बुलन्दशहर से अखिल भारत हिन्दू महासभा को प्राप्त दान सूची माह जून 2015

1.	भारत भूषण, एडवोकेट बुलन्दशहर (पापा जी की ७० वीं वर्ष गांठ पर दान)	200/-
2.	मनीष कुमार, बुलन्दशहर (पापा जी के ७१ वें जन्म दिवस पर दान)	150/-
3.	एल. पी. शर्मा बुलन्दशहर (दान)	100/-
4.	रमेश चन्द सक्सेना द्वारा श्रीमती सुषमा सक्सेना एडवोकेट २०, न्यू चैम्बर सिविल कोर्ट, बुलन्दशहर (अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर दान)	100/-
	टोटल	550/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

ये पाकिस्तान परस्त भारत विरोधी आजाद क्यों हैं

अवधेश कुमार

इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि जम्मू कश्मीर में अलगाववादी तत्व फिर से अस्थिरता, हिंसा और अव्यवस्था की स्थिति पैदा करने की साजिश कर रहे हैं। ऑल पार्टी हुर्रियत कान्फ्रेंस के एक धड़े के नेता सैयद अली शाह गिलानी की १५ अप्रैल को दिल्ली से कश्मीर वापसी के दिन से लेकर आप नजर उठा लीजिए। घटनायें इसको प्रमाणित कर देंगी। वास्तव में अभी उन्होंने त्राल की अपनी रैली में पवित्र अमरनाथ यात्रा को १५ दिन से १ महीने तक सीमित करने का जो भाषण दिया है वह इसी की कड़ी है। इस भाषण में वहां के एक समुदाय को वास्तव में इस यात्रा के विरुद्ध भड़काने की कोशिश की गई है। २००८ में श्री अमरनाथ यात्रा को ही निशान्ना बनाकर अलगाववादियों और आतंकवादियों ने वहां अशांति एवं हिंसा कायम करने में सफलता पाई थी। निश्चय ही वे फिर से वही स्थिति पैदा करना चाहते हों। जम्मू कश्मीर के उप मुख्यमंत्री निर्मल सिंह ने पहले और मुख्यमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद ने बाद में यह साफ कर दिया है कि यात्रा पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ही चलेगा। सुरक्षा से लेकर यात्रियों के ठहरने, उनके खाने–पीने सबकी व्यवस्था उसी अनुसार की जा रही है। यानी २ जुलाई से आरंभ होकर यह करीब दो महीने तक चलेगी। तो इससे हमें कुछ समय के लिए संतोष हो सकता है। पर ये अलगाववादी जैसा माहौल बना रहे हैं उसमें ये अपनी साजिश को सफल करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं।

१ मई को त्राल की जामिया मस्जिद में नमाज ए जुमा अता करने के बाद गिलानी ने जो भाषण दिया उसमें अमरनाथ यात्रा को सीमित करने की बात केवल उसका एक अंश था। हालांकि इसमें भी उनका यह गुरुर झलक रहा था कि यहां वो जैसा चाहेंगे वही होना चाहिए। तीर्थयात्रियों को उनके रहमोकरम पर अपनी इष्टदेव की यात्रा करनी चाहिए। लेकिन उसमें गिलानी ने भारत के खिलाफ पूरा विष वमन किया। यह भी कहा कि भारत का जिस तरह बंटवारा हुआ जम्मू कश्मीर को पाकिस्तान में शामिल हो जाना चाहिए था। हम पाकिस्तान में शामिल होने की लड़ाई लड़ रहे हैं और लड़ते रहेंगे। उनकी सभा में कुछ लोगों ने पाकिस्तानी झंडे लहराये। पाकिस्तान के समर्थन में नारे लगाए गए। भारत के विरोध में नारे लगाए गए। खूब सांप्रदायिक नारे भी लगे। गिलानी ने तो यहां तक कह दिया कि जिनने बंदूक उठाई है वे मजबूर होकर। इस तरह उनने आतंकवाद का भी समर्थन कर दिया। वे ऐसा भाषण देने वाले अकेले नहीं थे।

आपको याद हो कि १८ अप्रैल को एक साथ गिलानी और उनसे थोड़ा उदारवादी माने जाने वाले मौलवी मीरवायज उमर फारूख तथा यासिन मलिक.... एक साथ आग उगल रहे थे। दरअसल, मसरत आलम को पाकिस्तान के पक्ष में नारा लगाने तथा झंडा फहराने के आरोप में गिरफ्तार किए जाने के बाद इनने जो बंद का आहवान किया था वह शांतिपूर्ण तो था नहीं। उसमें शामिल युवकों ने जगह–जगह तोड़फोड़ की, पत्थरबाजी की, पुलिस पोस्ट तक को आग लगाई। उसमें नियंत्रण करने के लिए पुलिस को गोली चलानी पड़ी तथा नरबल में एक नौंवी का छात्रा मारा गया। तो ये लोग उसके विरोध कर रहे थे और उसके घर शोक संवेदना व्यक्त करने जा रहे थे। मीरवायज ने शेर–ए–खास के नौहत्ता क्षेत्र में जुमे की नमाज के बाद विरोध मार्च का आयोजन किया। दूसरी ओर यासिन मलिक ने भी मार्च किया जिसमें स्वामी अग्निवेश शामिल थे। इस दिन जो स्थिति पैदा हुई उसमें त्राल क्षेत्र में दो युवक मारे गए। हालांकि इन नेताओं ने भारत के खिलाफ पूरा जहर उगला। लंबे समय बाद ये नेता एक साथ दिखे। यह भारत की दृष्टि से अत्यंत चिंताजनक प्रगति थी लेकिन हो गई। वहां मीरवायज ने आजादी के पक्ष में भाषण दिया, यासिन मलिक ने भी यही कहा कि हम भारत के विरुद्ध आजादी की लड़ाई लड़ते रहेंगे। पूरा भारत विरोधी वातावरण बनाने की कोशिश थी।

ऐसे कार्यक्रमों से उत्तेजना और तनाव तो बढ़ता ही है। ये क्षेत्र २०१० में पत्थर आतंक के लिए प्रसिद्ध थे जिसका जन्मदाता मसर्रत आलम था। तो उसकी गिरफ्तारी के बाद उसके द्वारा ईजाद पत्थरबाजी हुई उसमें सुरक्षा बलों को कार्रवाई करनी पड़ी। तो अब ये उसे तूल देकर फिर से किसी तरह जम्मू कश्मीर को ऐसी स्थिति में लाना चाहते हैं जिससे दुनिया ये कहे कि वहां वाकई भारत से अलग होनें की लड़ाई, जिसके साथ लोग हैं और भारत केवल सैन्य बल की बदौलत कश्मीर को नियंत्रित रख रहा है। ऐसा लगता है कि इसके पीछे पाकिस्तान की साजिश है। मसर्रत के रिहा होने के बाद ५० से ज्यादा फोन लश्कर ए तैयबा की ओर से उसे आए। हाफिज सईद ने उससे बात की। दूसरे जमात उद दावा के नेताओं ने बात किया था। गिलानी का कश्मीर लौटने का स्वागत वह दूसरे तरीके से भी कर सकता था। मेरी जान पाकिस्तान, गिलानी साहब की क्या पहचान पाकिस्तान पाकिस्तान, हाफिज सईद की क्या पहचान पाकिस्तान गकिस्तान..... इस प्रकार का नारा लगाने और पाकिस्तान का झंडा फहराना यूं ही नहीं हो सकता। निश्चित रुप से इसके पीछे सीमा पार की सुनियोजित रणनीति थी। पाकिस्तान अभी आतंकवादी हिंसा, मजहबी टकराव और राजनीतिक अनिश्चितता के उस दौर से गुजर रहा है जहां वहां के नेताओं के लिए कश्मीर एक मुद्दा हो सकता है अपनी राजनीति साधने के लिए। इसलिए वे इनका उपयोग कर रहे होंगे। पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र संघ से हर संभव तीन उपायों से कश्मीर की ओर मोड़ने की कोशिश की और तीनों बार उसे मुंह की खानी पड़ी। संयुक्त राष्ट्र संघ ने कह दिया कि यह दो देशों का मसला है जिसमें वह हस्तक्षेप नहीं करेगा। तो उसके पास रास्ता किसी तरह कश्मीर को हिंसा और अशांति में झोंकने तथा वहां अलगाववादी लड़ाई को तेज करने का है।

हुर्रियत के नेता पाकिस्तान के पिट्ठू है। पाकिस्तान भी इन्हें तभी तक पूछता है जब तक कि वहां ये कुछ उसके अनुसार करते रहे। चाहे वे पाकिस्तान में कश्मीर को मिलाने की मांग करें या फिर आजादी की। ऐसा नहीं करेंगे तो इनको मिलने वाली मदद रुक जाएगी। चुनाव के बाद भाजपा पीडीपी की सरकार ने पाकिस्तान की चिंता और बढ़ा दी है। उसका सरकारी कश्मीर ढांचा और गैर सरकारी ढांचा दोनों सक्रिय हैं। उनके पास बजट और गैर बजट की राशि भी है। इसलिए वे इनके माध्यम से अपना खेल रहे हैं। खासकर कश्मीरी पंडितों को स्मार्ट सिटी में बसाने के केन्द्र के संकल्प ने उनको परेशान कर दिया है। ये वापस बुलाने का विरोध नही करते, पर व्यवहार में इनका अलग बसाने का विरोध बास्तव में वापसी का विरोध ही है। यह विरोध करते–करते गिलानी श्रीअमरनाथ यात्रा तक पहुंच गए। क्यों? यही सांप्रदायिक मानसिकता है जिसे वे तेज आग के रुप में फैलाना चाह रहे हैं।

लेकिन प्रश्न है कि वो कौन होते हैं तय करने वाले कि कश्मीर पंडित कहां बसे, श्री अमरनाथ यात्रा कितने दिनों का हो? क्या कभी किसी ने ये तय किया है कि वो नमाज कितनी देर पढ़ें। या भारत ने कभी किसी हज यात्री को मजबूर किया है कि वो कितने दिनों में जाए। हज की योजनानुसार वो जाते हैं और उसी अनुसार सरकार सुविधायें देती है। जाहिर है, ये सांप्रदायिक सौहार्द्र के खलनायक हैं। ये शांति और लोकतंत्र के दुश्मन हैं। ये देश की एकता अखंडता के दुश्मन हैं। ये देश को तोड़ना चाहते हैं, इसलिए देशद्रोही हैं। परोक्ष रुप से आतंकवाद का समर्थन भी कर रहे हैं। तो इनके साथ अब व्यवहार वैसा ही करना चाहिए जैसा देश के गद्दारों के साथ किया जाता है। देश में यदि आप किसी से पुछिए उसकी प्रतिक्रिया गुस्से से भरी होगी। लेकिन एक बात पर एकमत है कि चाहे जितनी अशांति हो अब

शेष पृष्ठ 11 पर

हुर्रियत के नेता पाकिस्तान के पिट्ठू है। पाकिस्तान भी इन्हें तभी तक पूछता है जब तक कि वहां ये कुछ उसके अनुसार करते रहे। चाहे वे पाकिस्तान में कश्मीर को मिलाने की मांग करें या फिर आजादी की। ऐसा नहीं करेंगे तो इनको मिलने वाली मदद रुक जाएगी। चुनाव के बाद भाजपा पीडीपी की सरकार ने पाकिस्तान की चिंता और बढ़ा दी है। उसका सरकारी कश्मीर ढांचा और गैर सरकारी ढांचा दोनों सक्रिय हैं। उनके पास बजट और गैर बजट की राशि भी है। इसलिए वे इनके माध्यम से अपना खेल रहे हैं। खासकर कश्मीरी पंडितों को स्मार्ट सिटी में बसाने के केन्द्र के संकल्प ने उनको परेशान कर दिया है। ये वापस बुलाने का विरोध नही करते, पर व्यवहार में इनका अलग बसाने का विरोध वास्तव में वापसी का विरोध ही है।

इंसानियत भी तो सिखाओं मेरे दोस्त

मेरा बेटा बड़ा होकर डॉक्टर बनेगा, इंजीनियर बनेगा। चार्टेड एकाउंटेंट बनेगा। ये या वो बनेगा। अक्सर यह विचार हमारे–आपके संबके मन में कौंधता रहता है। यहां तक किसी भी बच्चे का जन्म होने से भी पहले हम उसके लिए सपने संजोने लगते हैं। उसे किसी भी तरह सफल व्यक्तित्व बनाने के सपने देखने का मतलब है उसे धन, वैभव, समृद्धि संपन्न बनाना। एक तरह से हम उसे नोट छापने की ऐसी मशीन बनाने के अरमान पालने लगते हैं कि जिससे उसे सुख के किसी साधन की कमी न रहे। पर हम एक पल के लिए भी यह नहीं सोचते कि वह धनवान बने या न बने पर बड़ा होकर इंसान जरूर बने। क्या हमारे मन में कभी आशंका भी आई है कि वह धनवान बनकर भी अगर इंसान की बजाय शैतान बन गया तो? कहीं हैवान न बन जाए। आप कह सकते हैं कि मैं इंसान हूं और मेरा बच्चा इंसान का बच्चा है। वह हैवान कैसे बनेगा? परंतु बिना उत्तेजित हुए ठंडे दिमाग से सोचिए कि जिसका दिल किसी दुखिया को देखकर पसीजता न हो तो उसे इंसान कहे भी तो कैसे? जो पर नारी को देखकर स्वयं पर नियंत्रण नहीं कर पाता और बेकाबू हो जाता हो उस हवस के पुजारी को इंसान कहे या शैतान? चाहे कितना भी बुरा लगे लेकिन सत्य तो यही है कि आज जो हैवानियत या शैतानियत को सीमाओं को लांघते हुए दिखाई दे रहे हैं वे किसी दूसरे ग्रह से तो आये नहीं है। हैं तो हमारे आपके ही लाल। उन्हें ये कुसंस्कार कहां से मिले? इसके जवाब में आप कहे सकते हैं कि कौन माता–पिता अपने बच्चे को ऐसे गंदे काम सिखाता है। आपकी बात सौ फीसदी सत्य है कि आपने अपने लाडले को यह नहीं सिखाया लेकिन अपने दिल पर हाथ रख कर कहो कि आपने उसे हर नारी को माँ या बहन समझने की सीख द्री? उसे गणित, विज्ञान, विदेशी भाषा, मैनेजमेंट, वकालत तो सिखायी लेकिन उसे इंसानियत सिखायी क्या? क्या आपने उसे समझाया कि दीन दुखी की मदद करनी चाहिए। नहीं, आपने तो उसे सिखाया, 'अपने काम से काम रखों। दूसरों के चक्कर में अपना समय बर्बाद मत करों।' क्या आपने कभी उसे कहा कि अगर कोई भूखा मिले तो उसे अपने हिस्से का आधा भोजन जरूर दो? किसी बूढ़े या विकलांग को हाथ पकड़कर सड़क पार करवाना तुम्हारा फर्ज है? याद करो आपने किस दिन उसे बताया था कि जीवों पर दया करों। मगर नाराज न हो। आपके पास समय ही कहां था। आप तो स्वयं ही उसके लिए संसाधन जुटाने में उलझे थे। आपके पास तो स्वयं अपने लिए भी समय नहीं था। जैसे तैसे खाना खाया और फिर लग गए– तीन के तेरह करने में। बहुत मजबूरी है क्योंकि तमाम प्रयासों के बावजूद आप अभी भी बहुतों से पिछड़े हुए हैं। आपके पास 'ये और वो' नहीं है। यह सब न हुआ तो समाज में नाक कट जाएगी। आप दिनरात लगे रहे तिकड़म भिड़ाने में कैसे जुटाऊ? रखो अपने दिल पर हाथ और कहो कि उसे इन्सानियत का पाठ भी पढ़ाया है। उसे यह समझाने की कोशिश की है कि हैवानियत या शैतानियत मत करना वरना मेरा सिर शर्म से झुक जाएगा। माफ करना संभावना कम ही है क्योंकि आप तो उसे समझाते रहे– 'सौ में से एक सौ एक अंक लाना वरना मेरी नाक कट जाएगी। वरना तुम्हें अच्छे कोर्स में एडमिशन नहीं मिलेगा। वरना अच्छा जॉब नहीं मिलेगा। वरना बटुआ भरा नहीं रहेगा फिर कैसे घुमोगे विदेश।' ठीक भी है, इन चीजों के बिना भी तो जिंदगी सहज नहीं रह सकती। मगर यह भी तो उतना ही सत्य है कि प्रेम, सद्भावना, इन्सानियत के बिना तो एक क्षण भी जीना कठिन है। रिश्तों की महत्व उसे नहीं सिखाया गया तो भगवान न करे कल आपका बुढ़ापा..! दिल–दिमाग से इंसानियत कायम रहे इसका उपाय यदि बचपन से किया जाए तो शायद कुछ हल निकल सकता हैं। अब यह न कहे–– बाप रे! आजकल के बच्चे..! बचपन तो क्या माँ के गर्भ में भी सीखा जा सकता है। अभिमन्यु ने चक्रव्यूह भेदने का ज्ञान गर्भ से ही प्राप्त किया था।

विनोद बब्बर

स्पष्ट, साहसिक और दूरदर्शी हो विदेश नीति

मिथिलेश सिंह

देश में जबसे नरेंद्र मोदी सरकार ने कार्यभार संभाला है, तबसे उन्होंने जबरदस्त तरीके से विदेश यात्राएं की हैं. इस बात के लिए उनकी सराहना और आलोचना दोनों की जा रही है. कोई कह रहा है कि उनकी यात्राओं से भारत का गौरव और रूतबा बढ़ रहा है, तो कोई कह रहा है कि वह कूटनीति की बजाय किसी 'इवेंट मैनेजर' की तरह शोर–शराबे और प्रचार कर रहे हैं। जहाँ तक बात विदेश नीतियां बनाने की हैं तो यह सच बात है कि विदेश नीतियां एक दिन में बनती और बिगड़ती नहीं हैं, लेकिन वगैर दूरगामी सोच के हम कहीं पहुँचने की कल्पना भी कैसे कर सकते हैं। अमेरिका और पश्चिमी देशों के सन्दर्भ में मोदी सरकार द्वारा अपनाई गयी नीतियां कुछ हद तक ठीक रही हैं, लेकिन उनका दूरगामी परीक्षण होना अभी बाकी है। इसके विपरीत पाकिस्तान के सम्बन्ध में हमारे प्रधानमंत्री की नीतियां स्पष्ट नहीं दिख रही हैं। जिस तेवर से नरेंद्र मोदी ने अपने शपथ–ग्रहण में सार्क देशों के प्रमुखों को आमंत्रित किया, विशेषकर नवाज शरीफ को, उसे विश्लेषकों और मीडिया समूहों में 'मास्टर–स्ट्रोक' की संज्ञा दी गयी। समय बीतने के साथ इस कथित 'मास्टर–स्ट्रोक' का प्रभाव कम होता चला गया और अब उफा में जिस प्रकार भारतीय प्रधानमंत्री को पाकिस्तान से बांतचीत की सम्भावना तलाशनी पड़ी हैं, उसे कूटनीति में निश्चित रूप से कदम पीछे हटाने का संकेत माना जा सकता है। बात को थोड़ा और स्पष्ट किया जाय तो विदेश नीति पर भारत के तेजी से बढ़ रहे कदमों को रोकने की बिसात जानबूझकर बिछाई गयी और इस खेल में चीन, पाकिस्तान के अतिरिक्त रूस ने भी भारत को झटका देने में कसर नहीं छोड़ा। अमेरिका और भारत के बीच बढ़ रही पींगों से निश्चित रूप से रूस और चीन चिंतित हुए थे, इसलिए चीन पाकिस्तान इकनॉमिक कॉरीडोर के माध्यम से इस खेल में एक बड़ी बाजी चली गयी, जिसने भारत के माथे पर चिंता की लकीरों को गहरा दिया। दूसरी ओर चरमपंथ को जाने वाली फंडिंग पर हाल ही में ब्रिस्बेन में आयोजित हुए सम्मेलन में पाकिस्तान के खिलाफ लाए गए भारत के निंदा प्रस्ताव पर रूस के विपरीत रूख ने भारत सरकार को असहज स्थिति में ला खड़ा किया। इस बैठक में जमात–उल–दावा और लश्कर–ए–तय्यबा के खिलाफ पाकिस्तान की ओर से कोई कदम नहीं उठाये जाने पर भारत ने पाक की निंदा किए जाने की मांग की थी। गौरतलब है कि इसी मुद्दे पर चीन पहले ही पाकिस्तान के समर्थन में खड़ा है। खैर, यहाँ तक भी भारतीय विदेश नीति को कुछ खास झटका नहीं लगा था, लेकिन इससे आगे बढ़ने पर स्पष्ट रूप से हमारी लड़खड़ाहट और होमवर्क का अभाव दिखा। हाल ही में उफा में हुए 'ब्रिक्स' सम्मलेन में नरेंद्र मोदी ने इस मामले में चीन से अपना विरोध व्यक्त करने की कोशिश की तो चीन ने तत्काल अपनी पूर्व नियोजित नीति के अनुसार टका सा जवाब दे दिया कि उसने पाकिस्तान का साथ तथ्यों के आधार पर दिया है। हालाँकि,

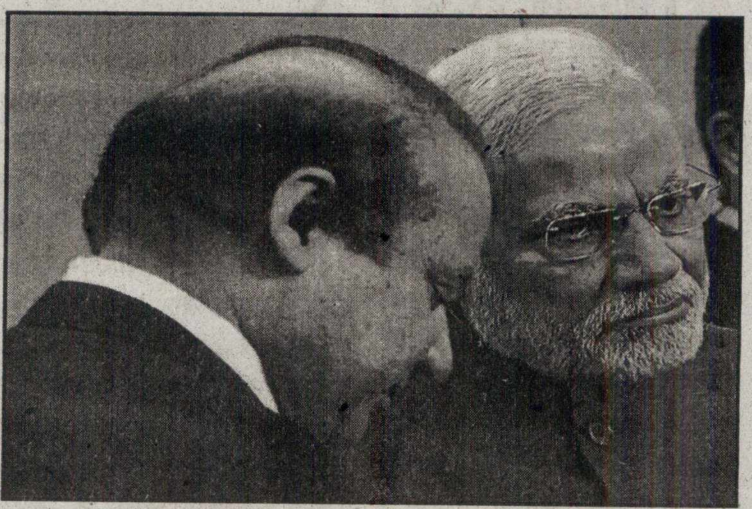

इसके बाद नरेंद्र मोदी ने खुले मंच से संकेत देने की कोशिश जरूर की कि आतंकवाद पर दोहरी नीतियां नहीं अपनाई जानी चाहिए। परन्तु सवाल इतना सीधा होता तो इसे कूटनीति कहा ही क्यों जाता? थोड़ी सरल भाषा में इसे 'फ्लोर मैनेजमेंट' भी सकते हैं, जिसमें भारतीय प्रशासन की अक्षमता ही दिखी। इसके बावजूद, यदि विरोध जताना आवश्यक ही था तो प्रधानमंत्री की बजाय विदेश मंत्री या विदेश सचिव के माध्यम से बात पहुंचाई जा सकती थी। इस अंतर्राष्ट्रीय राजनीति से अलग हटकर जब हम भारत पाकिस्तान के द्विपक्षीय संबंधों की बात करते हैं तो यहाँ भी हमें और सावधानी से आगे बढ़ने की जरूरत नजर आती है। शपथ–ग्रहण में नवाज शरीफ के आने के बाद जब भारत सरकार ने कश्मीरी अलगाववादियों से मिलने की खातिर पाकिस्तान से विदेश सचिव स्तर की बातचीत रद्द कर दी, उसके बाद घाघ राजनीतिज्ञ बन चुके मियां नवाज शरीफ भारत के पाले में गेंद डालने में सफल रहे और उसका परिणाम उन्हें अब उफा में ब्रिक्स सम्मलेन में मिल ही गया जब भारतीय प्रधानमंत्री ने अपनी पहल पर उनसे न सिर्फ बातचीत करना स्वीकार किया, बल्कि सार्क सम्मलेन के बहाने पाकिस्तान आने का निमंत्रण भी ग्रहण किया। हालाँकि, इस सरकार को पिछली भारतीय सरकारों की तरह पाकिस्तानी हुक्मरानों ने हलके में नहीं लिया होगा, क्योंकि ब्रिक्स में दोनों प्रधानमंत्रियों के मिलने के बाद जो बयान जारी हुए, उसमें आतंकवाद के खिलाफ कठोर बातें तो कही ही गयीं, साथ में 'कश्मीर समस्या' का जिक्र न होना भी भारतीय खेमे को कुछ हद तक संतुष्टि का कारण बना। पर सवाल यह है कि भारत की पाकिस्तान के सन्दर्भ में नीतियां और स्पष्ट होने के साथ साथ दूरगामी क्यों नहीं हैं? इस सन्दर्भ में एक सकारात्मक खबर ने मेरा ध्यान खींचा, जिसमें पाकिस्तान के पूर्व वित्त मंत्री और जाने–माने अर्थशास्त्री डॉक्टर हफीज पाशा ने व्यापार में चीन को टक्कर देने के लिए पाकिस्तान को भारत का साथ लेना चाहिए, इस प्रकार का वक्तव्य दिया है। उन्होंने अपने देश की सरकार से मांग भी की कि वह भारत–पाक व्यापार की बाधाएं दूर करे और भारत को व्यापार प्रोत्साहन दे, ताकि चीन के साथ

शेष पृष्ठ 10 पर

UNKNOWN & UNEXPLORED

Pranjit Agarwala

Many people in India and the world are unaware of the fact that the North-East India has potential to become India's major source of fruits and horticulture products but the region's potential has remained largely untapped because of inherent weaknesses.

North-East India is made up of eight States, Assam, Arunachal Pradesh, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Nagaland, Tripura and Sikkim. Yet traditionally the region has been known mainly for Assam's tea, oil and the one horned rhino of Kaziranga National Park. Even today many people in the country are unaware of the fact that the North-East has the potential to become India's major source of fruits and horticulture products. It is a storehouse of exotic flowers like Orchids, Chrysanthemums, Carnations etc. Its forests have a rich variety of medicinal and aromatic plants. And it is an attractive destination for eco and wildlife tourism. However, the region's potential has remained largely untapped because of inherent weaknesses like underdeveloped infrastructure, poor communications, insufficient market links and the lack of proper exposure.

Geographically, it is a region of mountains and valleys bisected by swift flowing mountain streams and rivers many of which are the tributaries of the Brahmaputra. The Brahmaputra River traverses a length of 800 kms through Assam, meandering on through Bangladesh to finally disgorge into the Bay of Bengal. Sikkim which has also been clubbed with the seven North-Eastern states is not contiguous with the region. It however shares the same geographical features. All the states have agrarian economies. Besides traditional agriculture, the region's verdant forests, fertile valleys and agro-climatic conditions make it suitable for horticulture and floriculture.

The region produces Bananas, Pineapples, Oranges and Jackfruits on a large scale. These varieties cover 60 per cent of the cultivated area under fruit crops and account for 70 per cent of the fruits produced. Litchees, Apples, Passion Fruits, Cashew Nuts, Tapioca and Coconuts are also produced but on a smaller scale. Areca Nuts are also a major product of the region. Ginger, Turmeric and Chillies are the main spices produced here, while Potatoes are the major tuber crop. In

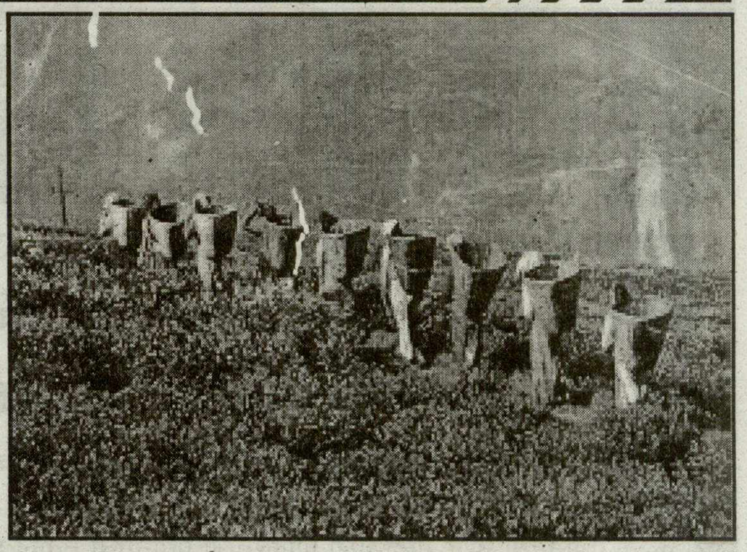

fact Assam's "Bhoot Jolokia" has been acknowledged as the hottest chilly in the world.

According to a study conducted by CMI Social Research Centre for the Agricultural and Processed Food Products Development Authority (APEDA), New Delhi, in 2005, the region's total annual production of fruits was a whopping 23.35 lakh tonnes. The break-up was as follows: Oranges: 2,78,904 Metric Tonnes (MT), Bananas: 7,61,293 MT, Pineapples: 5,39,577 MT, Papaya: 1,35,892 MT, Jackfruits: 4,29,147 MT and other fruits: 1,90,187 MT. The figures for major spices were Ginger: 2, 79, 394 MT,

conitnued on page no. 11

योग के बहाने नफरत

डॉ० सुशील गुप्ता

२१ जून को "विश्व योग दिवस" के निकट आते–आते सारे भारत में कुछ मुस्लिम कट्टरपंथी तथा सेक्यूलर मीडिया के कुछ मुस्लिम पंरस्त चैनल योग और उसके बहाने केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार को कोसने लग गये।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने २१ जून को 'विश्व योग दिवस' की घोषणा करी थी। इस पर विश्व के १७५ देशों ने अपनी सहमति भी दे दी। इनमे लगभग ४० मुस्लिम देश हैं। परन्तु हमारे अपने ही देश में प्राचीन भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग योग पर उठने वाला विरोध निश्चित रूप से मुस्लिम कट्टरपंथ की दूषित सोच का हिस्सा है। क्योंकि पिछले अनेकों वर्षों से हमारे देश में वोटों के लालच में मुस्लिम कट्टरपंथ को लगातार बढ़ावा दिया जाता रहा है। जिससे ये कट्टरपंथी इस भारत देश को दारूल इस्लाम बनाने के सपने देखने लगे। परन्तु अब नरेन्द्र मोदी सरकार में यह तुष्टिकरण की बयार थमती नजर आ रही है। इसलिये राष्ट्रवाद और राष्ट्रहित के हर विषय को मुस्लिम विरोधी बताकर अपनी भड़ास निकालने का प्रयास ये दारूल इस्लाम का सपना देखने वाले कट्टरपंथी करने लगे हैं। इस्लाम का ठेकेदार सिद्व करना चाहते हैं। इसलिये बार –बार "इस्लाम खतरे में है।" का नारा भारत के मुसलमान ही लगाते रहे हैं, अरब के नहीं। इसीलिये इस्लामी आतंकवाद को भी अरब देशों से ज्यादा पनाह भारतीय महाद्वीप में मिली है। इसलिये आतंकवाद की तरह ही इन कट्टरपंथियों पर भी तुरन्त रोक लगाने की आवश्यकता है। वास्तव में इस्लाम को सबसे अधिक मजाक व नफरत भी ऐसे ही कट्टरपंथियों के कारण मिलती है।

सूर्य की ओर मुख करके सूर्य नमस्कार करने का विरोध करने वाले मुस्लिम कट्टरपंथी यह बतायेगें क्या, कि आखिर सूर्य उनके अल्लाह का बनाया हुआ नहीं है क्या? जबकि कुरान के अनुसार–अल्लाह ने मनुष्यों से भी पहले सूर्य और चन्द्रमा को बनाया था। तो फिर सूर्य से इतनी नफरत

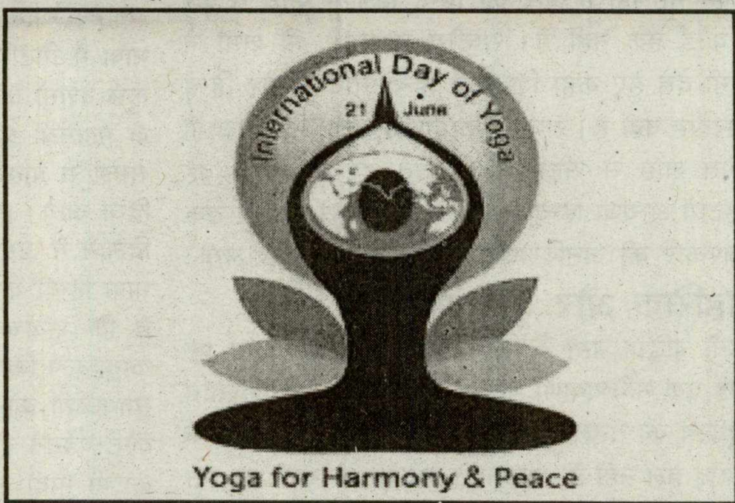

क्यों? रमजान में सूरज के उगने और छिपने के आधार पर रोजे खोले जाते हैं। सूरज ही सारी दुनिया का सर्वोच्च ऊर्जा का स्रोत है। तो फिर उससे ऊर्जा लेते हुये सूर्य नमस्कार करना कैसे हराम हो सकता है।

सन् १६८५ में मिस्र के इस्लामी योग गुरु ने योग को एक इस्लामी व्यायाम करार दिया था। उन्होने नमाज को योग और योग को नमाज बताया था। अशरफ एक निजामी नामक एक इस्लामी विद्वान ने योग से संबंधित अपनी पुस्तक में लिखा है कि –जिस प्रकार से नमाज से पूर्व वजू किया जाता है, उसी प्रकार से योग में भी स्वच्छता की विधि है, जिससे शरीर की सफाई हो जाती है। जिस प्रकार नमाज से पूर्व नियत की जाती है, उसी प्रकार योग में संकल्प किया जाता है। एजो को निजामी ने योग का "शंशाक आसन" करार दिया है।

जब २० नवम्बर –२००८ को मलेशिया के उलेमा ने योग के विरूद्ध बयान नही किया था, तो वहां के प्रधानमंत्री अब्दुल्लाह बदाली ने कहा था, कि अगर मुसलमान योग को केवल शारीरिक रूप से सेहतमंद रहने के लिये करते हैं, तो इसमे कोई बुराई नही है। न ही इस्लाम इसमें आड़े आता है।

इसके अतिरिक्त इण्डोनेशिया के प्रबुद्ध मुस्लिम आलिम मौलवी सऊदी ने भी बयान दिया है, कि "इण्डोनेशिया कीउलेमा परिषद को इस मुदद्दे पर बयानबाजी नही करनी चाहिये। उन्होंने यह भी कहा, कि योग एक बढ़िया व्यायाम है। यदि किसी मुस्लिम ने इनके विरूद्ध बयान दिया तो उससे पहले से ही दुविधा से जूझ रहे इस्लाम और मुसलमानों पर कट्टरपंथ का एक और ठप्पा लग जायेगा।" उन्होने यह भी कहा कि इसी प्रकार के उलूल जलूल बयानों के कारण पश्चिमी मीडिया मुसलमानों का मजाक उड़ाता है। दारूल उलूम, देवबन्द ने भी योग को इस्लामी पद्धति के आधार पर यह कहते हुये मान्य घोषित किया है, कि इसमे ओम

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा पाकिस्तान जाने का निमंत्रण स्वीकार करना देशहित में नहीं, होगा राष्ट्रव्यापी विरोध : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से मुलाकात करने को देश की जनता से धोखा करार दिया है। गौरतलब है कि रूस के ऊफा में हुए ब्रिक्स सम्मलेन में, भारतीय प्रशासन ने पहल करते हुए पाक प्रधानमंत्री से मुलाकात करने का रास्ता निकाला, जिसका देश भर में विरोध हो रहा है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कौशिक ने प्रधानमंत्री मोदी को '५६ इंच के सीने' वाली बात याद दिलाते हुए कहा कि एक भारत माता के सैनिक के शहीद होने पर दिया हुआ वचन पीएम भूल चुके हैं। राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा कि पाकिस्तान की आतंकी मानसिकता में जरा भी बदलाव नहीं आया है, वह पहले की ही तरह सीमा पर फायरिंग और आतंकी कारगुजारियों में लगा हुआ है, इसलिए उससे बातचीत करने का विचार ही नहीं उठना चाहिए। साथ ही साथ पाक पीएम नवाज शरीफ ने मुंबई हमले के दोषी आतंकी लखवी की आवाज सैम्पल लेने का जो वादा किया था, उससे आतंकी जकीउर रहमान लखवी मुकर गया है। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा कि पाकिस्तान जाने का निमंत्रण स्वीकार करके प्रधानमंत्री ने देश को धोखा दिया है और उनके इस कार्यक्रम का राष्ट्रव्यापी विरोध किया जायेगा। हिन्दू महासभा पदाधिकारी एकमत से प्रधानमंत्री की प्रस्तावित पाकिस्तान यात्रा का विरोध करते हुए पाकिस्तान को आतंकी देश घोषित करने के प्रयासों को तेज किये जाने के पक्ष में हैं।

राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को तुरंत हटाये भाजपा : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महसभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके मांग की है कि राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को तत्काल मुख्यमंत्री पद से हटाया जाय, क्योंकि अब वह हिन्दुओं के खिलाफ काम करने लगी हैं। गौरतलब है कि हिंदुत्व के नाम पर चुनकर आयी वसुंधरा सरकार अब राजस्थान में मंदिरों को ढहाने का कार्य कर रही हैं और इस मुद्दे पर हिन्दू महासभा कड़ा विरोध प्रकट कर रही है। हिन्दू महासभा के कार्यकर्त्ता जयपुर में कई जगहों पर आंदोलन कर रहे हैं और राष्ट्रीय नेताओं को वहां के हालत से अवगत कराया है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कौशिक ने स्पष्ट कहा कि अब पानी सर के ऊपर बहने लगा है, हिन्दू भावनाओं की परवाह किसी को भी नहीं है और जो हिन्दू हित में कार्य न कर सके उसे सत्ता में बने रहने का कोई हक नहीं है। राष्ट्रीय महामंत्री श्री शर्मा ने राजस्थान की मुख्यमंत्री को चेतावनी देते हुए कहा कि उन्हें हिन्दू मंदिरों और हिन्दू जनमानस की भावनाओं की कोई परवाह नहीं है। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह से सीधी मांग करते हुए कहा कि वह राजस्थान की मुख्यमंत्री को तुरंत हटायें अन्यथा हिन्दू महासभा दिल्ली से जयपुर तक बड़ा आंदोलन करेगी और राज्य सरकार की जनविरोधी नीतियों की पोल खोलेगी।

शेष पृष्ठ 8 का **स्पष्ट, साहसिक और दूरदर्शी.......**

बेहतर कॉम्पिटिशन हो सके। कितनी बढ़िया बात है, मगर इसकी व्यवहारिकता पर प्रश्नचिन्ह लगा हुआ है। हालाँकि, यह एक भविष्यवाणी भी है कि यदि भारत पाकिस्तान के सम्बन्ध निकट भविष्य में कभी सुधरने को तत्पर हुए तो व्यापार ही इसका प्लेटफॉर्म बन सकेगा, इसके अतिरिक्त दूसरा कोई हल नहीं है। कूटनीति, व्यापार के बाद अब इस पूरी प्रक्रिया को सामरिक दृष्टि से देखना भी उतना ही आवश्यक है, क्योंकि दोनों देशों की सेनाएं जब तब आमने सामने आ खड़ी होती हैं और एक झगड़ालू इतिहास के लिहाज से तनाव बढ़ता ही जाता है। इसकी बानगी आप इस बात से ही समझ लीजिये कि ब्रिक्स में दोनों देशों की बैठक से पहले पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ने परमाणु हथियारों की धमकी वाले बयान दिए। इसके अतिरिक्त, भारत के रक्षा मंत्री मनोहर परिकर ने कुछ दिनों पहले जब आतंक से निपटने के लिए आतंक के इस्तेमाल की बात की, तो इस बात पर काफी होहल्ला हुआ। इन दोनों बयानों के अतिरिक्त हजारों बयान दोनों तरह से आते ही रहते हैं जो आग में घी डालने का काम करते हैं। ऐसे मोर्चों पर हमारी विदेश नीति को साहसिक होने की आवश्यकता है, बल्कि 'दुस्साहसिक' ज्यादा उपयुक्त शब्द रहेगा। चाहे लाख बातें कही जाएँ, लेकिन भारतीय सेना और उसकी क्षमता पाकिस्तानी सेना के मुकाबले बीस ही नहीं, बल्कि इक्कीस है और इसका सबूत उसने पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद को जम्मू कश्मीर में कुचलकर दे दिया है। आवश्यकता पड़ने पर खुफिया आपरेशनों की गति बढ़ाने से भारत को भला क्यों परहेज होना चाहिए? लब्बोलुआब यह कि बजाय कि हम पाकिस्तान की यहाँ वहां शिकायत करें, उसके खिलाफ प्रस्ताव लाए और फिर बातचीत की पहल भी खुद ही करें, क्या यह बेहतर नहीं होगा कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हम उसकी तारीफ करें और व्यापार बढ़ाने के कदम भी उठाएं और ग्राउंड पर कूटनीतिक और खुफिया माध्यमों से उसकी गर्दन हाथ में रखें। शायद, कूटनीति की परिभाषा भी यही है। चाणक्य नीति के अनुसार ध्यान रखना आवश्यक है कि जब कूटनीति असफल होती है, तब युद्ध की शुरुआत होती है और भारत पाकिस्तान के बीच कूटनीति रही ही नहीं, यह इस बात का बड़ा सबूत है। उम्मीद की जानी चाहिए कि उम्मीदों के बादशाह हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्पष्ट, साहसिक और दूरदर्शी विदेश नीति के सहारे नासूर बन चुके हमारे पडोसी का इलाज करने में सफल रहेंगे, अन्यथा इतिहास का कूड़ेदान उनको भी नहीं बख्शेगा!

अंग्रेजी विरोधियों ने सर्वोच्च न्यायालय को भंग करने की मांग की

अखिल भारतीय अंग्रेजी अनिवार्यता विरोधी मंच द्वारा महासभा भवन में एक पत्रकार वार्ता आयोजित की गयी। जिसे मंच के संरक्षक श्री जय भगवान गोयल, अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक और महामंत्री श्री मुकेश जैन ने संयुक्त रूप से सम्बोधित करते हुए पत्रकारों को बताया कि आजादी के ६७ साल पूरे होने के बाद भी हमारा सर्वोच्च न्यायालय अंग्रेजी की गुलामी में जकड़ा हुआ है, इससे शर्मनाक कुछ हो ही नही सकता। जो सर्वोच्च न्यायालय अपनी राजभाषा हिन्दी के साथ खुले आम सरासर अन्याय कर रहा है, उससे देश न्याय की उम्मीद कैसे कर सकता है? पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए मंच के संरक्षक श्री जय भगवान गोयल ने कहा कि भारतीय संविधान धर्म, मूल वंश, जाति और भाषा के आधार पर नियुक्तियों में भेद भाव की मनाही करता है। उसके बाद भी सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीशों की नियुक्ति में हिन्दी और भारतीय भाषायी वकीलों के साथ भाषायी आधार पर भेदभाव किया जा रहा है और केवल अंग्रेजी दां वकीलों की एक तरफा भरती करके भारतीय संविधान के मूलाधिकारों की धज्जियां उड़ाने में शान समझी जा रही है। पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए अंग्रेजी अनिवार्यता विरोधी मंच और हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक ने बताया कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३५१ के अनुसार हिन्दी का विकास करना संघ का कर्तव्य है किन्तु संघ के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीश अपने इस कर्तव्य से आंखे बन्द किये हुए एक विदेशी भाषा में गिटपिट में अपनी शान समझते हैं। जिसे देखकर पूरा देश शर्मसार होता है, पर कुछ बेशर्मो को इसे करते हुए शर्म भी नहीं आती। पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए मंच के महामंत्री श्री मुकेश जैन ने कहा कि अब वक्त आ गया है कि वादी और प्रतिवादी की समझ से बाहर की विदेशी भाषा अंग्रेजी को सर्वोच्च न्यायालय से बाहर का रास्ता दिखा दिया जाये। हाल ही में तिहाड़ कारागाह के एक अधीक्षक ने भी कैदियों को सही न्याय दिलाने में अंग्रेजी को बाधा बताते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय की भाषा हिन्दी करने की सरकार से अपील की थी। श्री जैन ने कहा कि अब वक्त आ गया है कि सर्वोच्च न्यायालय को भी योजना आयोग की तरह भंग करके इसका पूरा कायाकल्प किया जाये। इसी के साथ अंग्रेजों की गुलामी में जीने में शान समझ रहे इसके न्यायधीशों को भी बाहर का रास्ता दिखाया जाये। श्री जैन ने गर्मी के दिनों में भी काला कोट पहनने के अंग्रेजी जुल्मों सितम से आजाद हिन्दुस्तान के वकीलों को राहत दिलाने का भी मोदी सरकार से अनुरोध किया। पत्रकार सम्मेलन में खासतौर पर बुलाये सर्वोच्च न्यायालय के वकील श्री शिव सागर तिवारी को मंच के अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक ने माल्यार्पण करके सम्मानित किया और सरकार से अनुरोध किया कि सरकार श्री तिवारी द्वारा सर्वोच्च न्यायालय की कार्यवाही हिन्दी में करने सम्बन्धी याचिका का सर्वोच्च न्यायालय में समर्थन करके अपने संवैधानिक कर्तव्यों का पालन करें।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 9 का

योग के बहाने.......

के स्थान पर अल्लाह, मुसलमानों को कहना चाहिये या खामोश रहना चाहिये। कट्टर इस्लामिक देश ईरान के अन्दर २२ योग केन्द्र हैं और ईरान की राजधानी तेहरान में ही अकेले ६३ योग केन्द्र हैं। जहां केवल मुसलमान ही योग करते हैं। और सूर्य नमस्कार भी। फिर भी यदि योग भगवाकरण हैं, तो क्या योग पर सहमति देने वाले ४० मुस्लिम देशों समेत विश्व के १७६ देशों का भगवाकरण हो गया है। परन्तु वास्तव में यही देखने में आ रहा है, कि भारत के कुछ कट्टरपंथी मुसलमानों को हर उस चीज से नफरत रहती है, जिसका सबंघ भारत की प्राचीन हिन्दू संस्कृति से रत्ती भी रहा हो। जैसे – योग, वन्देमातरम् पूजा, प्रसव, हिन्दू महापुरूष, इस देश का वैदिक कालीन इतिहास, गाय आदि। सऊदी अरब के मानसिक गुलाम ये लोग अरब की तरफ तो सजदा कर लेगें परन्तु सूरज की तरफ नहीं। जबकि यह साबित तथ्य है कि इस देश के ६६ प्रतिशत मुसलमान के पूर्वज धर्मान्तरण से पूर्व में कभी न कभी हिन्दू ही रहे थे। परन्तु स्वामी विवेकानन्द के अनुसार –धर्मान्तरण से राष्ट्रान्तरण होता है। अपने मूल राष्ट्र के प्रति निष्ठा समाप्त हो जाती है। तथा जब एक हिन्दू धर्मान्तरित होता है तो केवल एक हिन्दू ही कम नही होता, बल्कि एक शत्रु बढ़ जाता है। आज यह स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ रहा है। योग के बहाने हिन्दुत्व से नफरत दिखाने का यह स्पष्ट उदाहरण है। यदि योग में सूर्य को नमस्कार करना हराम है, तो सेक्यूलरों हिन्दुओं द्वारा मुस्लिम टोपियां पहनकर दिखावा करना क्या है।

शेष पृष्ठ 1 का

वादाखिलाफी पर.......

को भी भेजी गई हैं। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी चुनाव से पूर्व विदेशी बैंको में जमा कालाधन वापस भारत लाने का वादा देशवासियों से किये थे, इसलिये इस वादे को शीघ्र पूरा करें।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..........150/- रुपये
द्विवार्षिक..........300/- रुपये
आजीवन सदस्य..........1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।
पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 7 का

ये 'ाकिस्तान परस्त.......

इन सबको उनके मुकाम पर पहुंचा देना चाहिए। यानी पहले कड़े कानूनों में मुकदमा करके जेल में डालो, इनको सजा दिलवाओ, जो इनके समर्थन में आयें उनके साथ सुरक्षा बल कार्रवाई करें। यदि देश की एकता को बचाने के लिए कुछ लोगों की बलि चढ़ती है इसमें हिचक नहीं होनी चाहिए।आखिर भारत को बचाने के लिए कितने लोगों ने अपनी बलि चढ़ाई। कश्मीर को बचाने के लिए ही कितने शहीद हो गए तो जो इसके विरोधी है उनकी बलि चढ़ जाए तो उसमें समस्या क्या है। जो भी हो देश न तो एक इंच जमीन किसी को देने के हक में है और न ऐसी भारत विरोधी गतिविधियां चलाने वालों को आजाद देखने के पक्ष में।

conitnued from page no. 9

UNKNOWN..........

Turmeric: 29,078 MT, Chillies: 59,075 MT and Potatoes: 8, 31, 591 MT.

After taking into account post harvest losses, wastage and local consumption it was found that there were huge surpluses available for value addition and exports to the national and international markets. The surplus quantities available were Oranges: 74,564 MT, Bananas: 96,308 MT, Pineapples: 1,84,391 MT, Papaya: 20,320 MT, Jackfruit: 1,18,000 MT, Ginger:1,51,106 MT, Turmeric: 10,200 MT, Chillies: 34,274 MT and Potatoes: 1,51,862 MT. Since then under the initiative of the National Horticulture Mission the quantities have increased. But due to a lack of adequate infrastructure like storage, warehousing, food processing facilities, transportation and market linkages a large proportion of these surpluses are underpriced and grossly underutilised. With better utility and marketing these surpluses can help increase farmers' incomes and generate rural employment through food processing/agro-based industries, warehousing, cold chain, distribution networks etc. The North-East's forests are home to a wide variety of flowers, medicinal and aromatic plants. The flora is indigenous to this part of the country. Orchids and ornamental plants like the Rose, Chrysanthemums, Carnations etc grow naturally. Moreover the forested hills abound with a diverse range of herbs, plants and vines that have healing properties. In Assam itself, there are more than 900 types of such precious herbs and plants with the Brahmaputra Valley having 50 species of commercial value. There is a good demand for these medicinal and aromatic plants in the pharmaceutical industries and perfumeries here and abroad. At present floriculture is pursued mainly as a cottage industry in the region. For full fledged growth it has to be integrated from production to marketing.

Besides Kaziranga, there are many other wildlife sanctuaries with a rich variety of flora and fauna in the region. Different indigenous communities live along its river banks providing a kaleidoscope of ethnic life. For trekkers and nature lovers there are the forested hills with their rich bio-diversity, scenic beauty, rafting and angling. And the miles and miles of tea gardens replete with the scented air of fresh tea can be an invigorating experience for a tired traveller. On the whole the North-East provides the tourist a unique opportunity for a rendezvous with Mother Nature. The North-East therefore is not only about insurgency, ethnic violence and remoteness. It has the potential to become one of the most developed regions of the country. While it's unique geographical location bordering four countries can provide India the much needed overland access to the economies of South-East Asia.

शेष पृष्ठ 4 का

सावधान! आ रहा है......

■ दूध पिला रही मातायें यदि स्वाइन फ्लू से संक्रमित हो तो दूध दूसरे व्यक्ति के माध्यम से बच्चे को पिलायें।

इलाज

स्वाइन फ्लू का टीका उपलब्ध है। इससे इस बीमारी के संक्रमण से बचाव सम्भव है। स्वाइन फ्लू के संकेत अथवा लक्षण दिखाई देने पर लापरवाही अथवा विलम्ब नहीं करना चाहिये तुरन्त चिकित्सक से सम्पर्क करें ताकि समय पर जाँच और आवश्यक चिकित्सा प्रारंभ हो सके। ऐसी स्थिति में कोई भी असावधानी तथा स्व–चिकित्सा स्वास्थ्य सम्बन्धी गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न कर सकती हैं।

दिनांक 29 जुलाई से 04 अगस्त 2015 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दि॒न
गुरू पूर्णिमा	31 जुलाई	शुक्रवार
गणेश चतुर्थी	03 अगस्त	सोमवार

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

भारत-बांग्लादेश भूमि समझौता (एलबीए) ११६ वां संविधान संशोधन

- भारत की १११ बस्तियां चारों ओर से बांग्लादेश से घिरी हुई हैं और बांग्लादेश की ५१ बस्तियां देश के चार राज्यों में भारत की ओर से घिरी हुई हैं।
- ४१ वर्ष पूर्व इंदिरा और मुजीब में समझौता हुआ था कि भारत १११ बस्तियों की १०,००० एकड़ भूमि बांग्लादेश को देगा और बांग्लादेश ५१ बस्तियों की केवल ५१० एकड़ भूमि भारत को देगा।
- यह समझौता देश हित में नही था। भारत को ६४६० एकड़ भूमि बांग्लादेश को ज्यादा देनी होगी।
- क्या १९४७ में सवा तीन लाख वर्गमील जमीन पश्चिम तथा पूर्व में देकर मुस्लिम समस्या हल हो गयी है?
- ६७ वर्षों में दंगों में १८००० लोग मरे हैं, लाखों घायल हुए हैं, करोड़ों, अरबों की संपत्ति की हानि हुई है?
- सीमावर्ती क्षेत्रों में समय–समय पर बमबारी, घुसपैठ, बम फटने तथा गोलीबारी की घटनाएं होती हैं।
- पाकिस्तान तथा बांग्लादेश में हिंदुओं को द्वितीय श्रेणी का नागरिक घोषित किया गया है, जबकि खंडित भारत में मुस्लिमों को विशेषाधिकार और सुविधाएं देकर पुरस्कृत किया गया है।
- मीडिया वाले भी तुष्टीकरण कर रहे हैं, और वे मुस्लिमों को समुदाय विशेष कहकर लिखकर संबोधित कर रहे हैं। उनमे आक्रामक को आक्रमणकारी लिखने का साहस नही है।
- यदि किसी सावरकरवादी नेता और मुजीब में समझौता होता तो बांग्लादेश को ६४६० एकड़ भूमि सीमा पर भारत को बदले में अवश्य देनी पड़ती अन्यथा ऐसा घुटने टेकने वाला देश विरोधी शर्मनाक, निंदनीय समझौता कभी नही होता।
- देश के नेता अभी भी जानते हैं कि देश की जनता चलती –फिरती लाश की भांति मृत प्रायः है और मानसिंह की सोच वाली है। जबकि जयंती महाराणा प्रताप की मनाकर खाना पूर्ति कर लेती है।
- प्रधानमंत्री, विदेशमंत्री, असम के मुख्यमंत्री ने सपष्ट रूप से कहा था कि वे देश की एक इंच भूमि भी नही देंगे।
- मोदी, सुषमा स्वराज को बांग्लादेश से स्पष्ट कहना चाहिए था कि वे कांग्रेस मुक्त भारत के नारे के साथ चुनाव जीते हैं। अतः वे मनमोहन सिंह द्वारा किये गये अनुचित समझौते को क्यों और कैसे मान सकते हैं?
- खेद है कि ६ मई को राज्यसभा में और ७ मई को लोकसभा में एक भी सांसद ने समझौते का विरोध नही किया है। लगता है कि सभी सांसद अभी भी नेहरू–गांधी के दिखाये रास्ते पर चल रहे हैं।

प्रतिक्रिया

स्मरण रहे कि कुख्यात–देश विरोधी–अलगाववादी मुस्लिम लीग की स्थापना १९०६ में ढाका में हुई थी।

- १९४५–४६ के चुनावों में इसे ९३ प्रतिशत मुस्लिमों के वोट मिले थे। इसका मुख्य नारा था–देश विभाजन।
- बांग्लादेश में अभी भी उग्रवादी–कट्टरवादी सोच के कई संगठन हैं।
- १९४७ में वहां ३० प्रतिशत हिन्दू थे जबकि अब ८ प्रतिशत हैं।
- हिंदुओं को चिढ़ाने के लिए गोहत्या खुलेआम होती है।
- हिंदू धीमी आवाज से पूजा अर्चना कर सकता है।
- नेहरू ने बेरूबाड़ी दी जबकि राजीव ने तीन बीघा दिया।
- अब मोदी ६४६० एकड़ भूमि देने जा रहे हैं।
- दोनों मुख्य दलों ने कहा था कि एक भी मुस्लिम बांग्लादेशी परिवार भारत में अवैध रूप से नही रह रहा है।
- संस्थापक शेख मुजीबुर्रहमान को मुस्लिम डॉक्टरों से लाभ नही होता था। अंत में वे कई वर्षों से हिन्दू डॉक्टर की दवा खाकर स्वस्थ होते थे।

अनुरोध :– असम, पश्चिम बंगाल, मेघालय तथा त्रिपुरा की विधानसभाओं से विनम्र अनुरोध है कि वे ५० प्रतिशत के अधिक से अधिक प्रस्ताव पारित करें कि बांग्लादेश का समझौता तभी स्वीकार करें जब बांग्लादेश ६४६० एकड़ भूमि सीमा पर देने को तैयार हो।

इन्द्रदेव गुलाटी संस्थापक, सावरकरवाद प्रचार सभा बुलंदशहर, लक्ष्मेन्द्र गुप्ता

कबिरा खड़ा बजार में

घपलों के दलदल में शिक्षा तंत्र

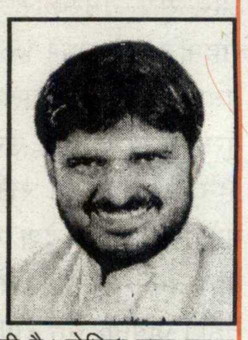

भारत की विद्वता का लोहा पूरा विश्व मानता है। इसीलिए भारत को विश्व गुरु माना जाता रहा है। विश्व के एक से एक शक्तिशाली राष्ट्रों में विशेषज्ञता वाले पदों पर भारत के ही लोग पदासीन हैं। कारण केवल उनकी विद्वता रही है। लेकिन कुछ समय से हमारे सिस्टम में भ्रष्टाचार की ऐसी जड़ें फैली की, शिक्षा की पूरी व्यवस्था को ही खोखला करने में लग गयीं। हम माने या न मानें हमारे शिक्षा व्यवस्था की जड़ों में घुन लग गया है। अगर हम अभी नहीं चेते तो हमारी आने वाली पीढ़ी ज्ञान और गुणवत्ता को नहीं, केवल शार्ट कट को अधिक महत्व देगी। हर तरफ केवल भ्रष्टाचार का ही बोलबाला होगा। भ्रष्टाचार खत्म करने का दम भरने वाली मोदी सरकार इस दिशा में अभी तक खामोश क्यों है। यह बात लोगों को पच नहीं रही है। व्यापमं घोटाला मामले में दो और संदिग्ध मौतों ने पूरे प्रकरण की भयावहता को गहरा करने के साथ फिर इस बात को रेखांकित किया है कि इस घपले के तार बुरी तरह उलझे हुए हैं। व्यावसायिक परीक्षा मंडल (व्यापमं) मध्य प्रदेश में उन पदों की भर्तियां करता है। जिनकी भर्तियां मप्र लोक सेवा आयोग नहीं करता। इसके तहत प्री मेडिकल टेस्ट, प्री इंजीनियरिंग टेस्ट और कई सरकारी नौकरियों के एग्जाम होते हैं। घोटाले की बात उस वक्त सामने आई जब कॉन्ट्रैक्ट टीचर्स, ट्रैफिक पुलिस, सब इंस्पेक्टरों की भर्ती परीक्षा के अलावा मेडिकल एग्जाम में ऐसे लोगों को पास किया गया जिनके पास एग्जाम में बैठने तक की योग्यता नहीं थी। सरकारी नौकरियों में करीब हजार से ज्यादा और मेडिकल एग्जाम में ५०० से ज्यादा भर्तियां शक के घेरे में हैं। इस घोटाले की जांच मध्य प्रदेश हाईकोर्ट की निगरानी में एसआईटी कर रही है। कहने को तो मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री और केंद्रीय वित्त मंत्री ने निष्पक्ष जांच का भरोसा दिलाया है, परंतु ये आश्वासन कितने कारगर होंगे, यह तो समय ही बतायेगा। अब तक हुई जांच में यह स्पष्ट हो चुका है कि इस घोटाले में शीर्ष स्तर पर बैठे राजनेताओं, उच्च पदस्थ नौकरशाहों और शिक्षण संस्थाओं के वरिष्ठ अधिकारियों समेत अनेक छात्र और अभिभावक शामिल हैं। इस घपले की गंभीरता के मद्देनजर देश के समूचे शिक्षा–तंत्र में बुरी तरह से पैठ बना चुके भ्रष्टाचार और अनियमतिताओं की ओर ध्यान देने की जरूरत है। पिछले ही महीने सुप्रीम कोर्ट ने अखिल भारतीय स्तर पर होने वाली मेडिकल संस्थाओं में प्रवेश–परीक्षा को रद्द कर पुनः कराने का आदेश दिया है। इसके तार उत्तर प्रदेश की संयुक्त मेडिकल परीक्षा में हुई धांधली से जुड़ने के संकेत हैं और इसके परिणामों को रद्द करने की याचिकाएं न्यायालय में विचराधीन हैं। मई महीने में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय ने मेडिकल पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए हुई परीक्षा की जांच के आदेश दिये हैं। ये घटनाएं तो पिछले एक–दो महीने में ही सामने आयी हैं। दुर्भाग्य से ऐसे मामलों में मुख्यमंत्री, कई मंत्री, नौकशाह, कुलपति, रजिस्ट्रार, लोकसेवा आयोगों के प्रमुख व सचिव आदि जैसे लोग गिरफ्तार हो चुके हैं। व्यापमं और अन्य घोटाले हमारे सामने एक चुनौती हैं कि अब अपनी शिक्षा और भर्ती प्रणाली के कुप्रबंधन में ठोस सुधार की आवश्यकता है। अगर ऐसा नहीं हुआ, तो न सिर्फ हमारी युवा प्रतिभाओं का, बल्कि राष्ट्र का भविष्य भी अंधेरे की गर्त में चला जायेगा। यदि सरकारें और समाज अब नहीं चेते, कल अफसोस कर सकने का मौका भी नहीं होगा। **वीरेश त्यागी**

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 22 जुलाई से 28 जुलाई 2015 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।

पाकिस्तान के जनक मोहम्मद अली जिन्ना–भारत में अनेक विवादों का जन्मदाता!

हरिकृष्ण निगम

स्वतंत्रता के छह दशकों से अधिक समय बीत जाने के बाद भी इस देश में पाकिस्तान के जनक मोहम्मद अली जिन्ना का नाम जब कभी हमारा मीडिया किसी भी सन्दर्भ में उठाता है या उसके पुराने भाषणों या पत्रों की बात करता है, विवादों का एक तूफान खड़ा हो जाता है। यद्यपि यह सर्वविदित रहा है कि पाकिस्तान स्वतंत्र होने के बाद भी 'पाकिस्तान पेपर्स' शीर्षक से एक सजिल्द सरकारी दस्तावेज अधिकारिक रूप से पुस्तकाकार प्रकाशित करता था जो आज भी अनेक सरकारी व गैर–सरकारी पुस्तक–संग्रहालयों में उपलब्ध है। उसमें जिन्ना के भाषणों के मूलपाठ व अन्य सामग्री, चाहे वह भारत या हिन्दुओं के विरुद्ध उनका घृणा का पंचांग ही क्यों न हो, किसी को भी उपलब्ध हो सकता है।

पर यह एक क्रूर विडम्बना है कि हमारे देश के कुछ प्रमुख अंग्रेजी दैनिक पत्रों में जिन्ना के नाम पर बार–बार एक सनसनीखेज तमाशा करना एक बौद्धिक व्यसन दीखता प्रतीत होता है। जहाँ तक जिन्ना के स्वतंत्रता के पूर्व के उत्तेजक वक्तव्यों या भाषणों का प्रश्न है वे अनेक आधुनिक इतिहास–ग्रंथों व जिन्ना के जीवन–चरित्र लेखकों व समकालीन अंग्रेजी समाचार पत्रों व प्रकाशनों में विस्तृत रूप से उल्लिखित हैं।

अभी अधिक दिन नहीं हुए जब 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' के ६ जून २०१३ के अंक में इसके 'न्यूज नेटवर्क' द्वारा सरकार के मुख्य सूचना आयुक्त सत्यानन्द मिश्र का एक वक्तव्य प्रमुखता से प्रकाशित किया गया कि सरकार पाकिस्तान के संस्थापक जिन्ना के स्वतंत्रता पूर्व के दो 'भाषणों' को दो मास के भीतर प्रकाशित करे। कहा जाता है कि वे भाषण ऑल इंडिया रेडियो के अभिलेखागार में सुरक्षित हैं और प्रसार भारती ने जब सूचना अधिकार अधिनियम के तहत जब उनके बारे में जानकारी माँगी तब उसे देना अस्वीकार कर दिया था। यह एक लज्जा का विषय है कि प्रमुख सूचना आयुक्त को भारत सरकार को जिन्ना के विभाजन के पहले के किसी भाषण को जनसाधारण को उपलब्ध कराने के आदेश देने पड़े। क्या जिन्ना की प्रेत छाया का अभी भी ऑल इंडिया रेडियो के संग्रहालय से निकलने का भय है जो सरकार पर ग्रहण लगा सकती है? सभी जानते हैं कि जिन्ना की वे दबी–भड़काऊ टिप्पणियाँ आज भी भारत में रहने वाले मुसलमानों को घोर असमंजस में डाल सकती हैं। वे भाषण आज के कांग्रेसी नेताओं की वर्तमान मुस्लिम–तुष्टिकरण की राजनीति के विरुद्ध हो सकते हैं।

कुछ भी हो आज यह स्पष्ट झलकता है कि वर्तमान सत्तारुढ़ सरकार आधुनिक घटनाक्रमों के इस कटु सत्य को पचाने में अक्षम रही है। इतिहास का हर वह पक्ष जो कांग्रेस को असुविधाजनक लगता है जैसे सीमान्त गाँधी खान अब्दुल गफ्फार खान की देश विभाजन को लेकर महात्मा गाँधी से वितृष्णा या महात्मा गाँधी की सितम्बर १९४४ में ही देश के बँटवारे के लिए सहमति–यह सब जनता से किसी भी तरह छिपाने की साजिश जारी है। सन १९४० में २३ मार्च के दिन अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का अधिवेशन लाहौर में हुआ था जिसे लाहौर प्रस्ताव के स्थान पर पाकिस्तान निर्माण का संकल्प कहना समीचीन होगा क्योंकि इसमें ही जिन्ना ने भारत के उत्तर–पश्चिम व पूर्वी क्षेत्र में सम्पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न स्वायत्त इस्लामी राज्य की व्याख्या भी की थी। ११ अगस्त १९४७ की पाकिस्तानी संविधान सभा में जिन्ना के भाषण को यद्यपि बहुधा जिन्ना की निष्पक्षता के विषय में प्रचारित तो आज भी किया जाता है, पर महात्मा गाँधी द्वारा ११ सितम्बर १९४४, १७ सितम्बर, २१ सितम्बर ओर फिर तुरन्त २४ और २५ सितम्बर १९४४ को जिन्ना को लिखे पत्र यह बात साफ कर देते हैं कि महात्मा गाँधी का मनोबल टूटता जा रहा था और वे अप्रत्यक्ष रूप से शर्तों के साथ पाकिस्तान के लिए हामी भी भर चुके थे। जब मुस्लिम लीग ने अगस्त १९४६ में कलकत्ता में "डाइरेक्ट एक्शन" के नाम पर मुम्बई के निर्णय के बाद ही 'प्राविन्शियल एक्शन कमेटी' द्वारा प्रस्तावित धर्मान्तरण सहित आतंकवादी कृत्यों की खुली

चेतावनी दे दी थी पर कांग्रेस के नेतृत्व की तत्काल व बाद की व्यापक हिंसक घटनाओं के विरुद्ध निष्क्रियता मात्र राष्ट्रीय लज्जा का विषय ही कहा जा सकता है। आज की अंध मुस्लिम भक्ति की जड़ें उसी समय से चली आ रही हैं।

आज भी पाकिस्तान के निर्माण का कोई भी वृत्तान्त अधूरा ही रहेगा यदि इस अराजक राज्य–रोग स्टेट के अनियंत्रित आर्गनिक आयुधों के विकास कार्यक्रमों या महिलाओं की पिछड़ी मध्ययुगीन सामाजिक स्थिति को उजागर न किया जाए। सुन्नी सम्प्रदाय में ब्रेलवी और देवबन्दी विचारधाराओं के विरोधाभासों की प्रकृति को भी साऊदी अरब द्वारा विचारधाराओं के निर्यात और शिया सुन्नी सम्प्रदायों के पुरानी रक्त–रंजित पृष्ठभूमि के उभार में आज फिर देखा जा सकता है। आज अनेक अंतर्राष्ट्रीय रणनीतिक व भूराजनीति के अध्येता भी मानने लगे हैं कि पाकिस्तान में अयातोल्ला खुमैनी की नकल करने की इच्छा तो है और वह भारत के विरुद्ध विषवमन में निरन्तर परिलक्षित होता है पर दुर्भाग्य है क़ि ईरान की तरह उसके पास तेल नहीं है और वह अपनी घृणा की विचारधारा से सदैव अभिशप्त रहेगा। पाकिस्तान में एकीकृत या केन्द्रीकृत इस्लाम का रूप कभी नहीं पनप सकता है क्योंकि वह जातीय व भाषायी विरोधाभाषों पर टिका हुआ है। बलूची, पख्तून और सिंधी राष्ट्रवाद और विशेषकर उत्तर–पश्चिम के क्षेत्र अपनी स्वतंत्रता व स्वायत्तता की माँग से पीछे कभी नहीं हटे। राजव्यवस्था और सेना पंजाबी मूल के नागरिकों के नियंत्रण के बाहर इसलिए कभी नहीं आई और इसीलिए जनजातियों में विद्रोह और परायापन सदैव पनपता रहा। पाकिस्तान अपने जन्म से ही कृत्रिम व अक्षम राजव्यवस्था वाला देश इसलिए था कि यह वस्तुतः वार्ताओं, समझौतों और दबावों के द्वारा अंग्रेजों ने एक निगोशिएट स्टेट के रूप में पैदा किया था। इसीलिए पाकिस्तान की सही प्रकृति को समझना मुश्किल रहा है। यहाँ कथित बहुसंस्कृतिवाद का ढोंग कभी नहीं चल सका।

'पाकिस्तान धरती का सबसे खतरनाक स्थान क्यों कहा जाता है?'–इसकी पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा जाता है कि सेना पाकिस्तानी व्यवस्था का अकेला संस्थान है जो अपने आधिकारिक लक्ष्यों के प्रति दक्षता, कार्यकुशलता और पूरी प्रतिबद्धता दिखाता है। इन उद्देश्यों में कश्मीर पर नियंत्रण और भारत के प्रति घोषित घृणा ही है।

देश की राजनीति में कूटनीति और षड्यंत्र आज इतनी गहरी घुसपैठ कर चुके हैं कि सच को समझ पाना बहुत मुश्किल है। जिस कुटिल मन्तव्य से हमारे कुछ अंग्रेजी पत्रों में भी इस प्रकार समाचार गढ़े जाते हैं उससे नई सूचनाएँ तो नहीं मिलती हैं, उनसे नए–नए रहस्योद्घाटन ही होते रहते हैं। अन्यथा जिन्ना के भूत को हमारे यहाँ बार–बार जगाने का भला उद्देश्य क्या हो सकता है? क्या हम कभी विस्मृत कर सकते हैं कि आजादी के संघर्ष काल में ठीक गाँधीजी की नाक के नीचे मोपलाओं ने १९१७ में दक्षिण में हजारों हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा था। तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष एनी बेसेन्ट ने गाँधी जी को इसकी जानकारी दी थी। पाकिस्तान की माँग को वजन देने के लिए जिन्नां के आवाहन पर १६ अगस्त १९४६ को कलकत्ते में मुसलमानों ने लगभग २० हजार हिन्दुओं का कत्ल किया था। इस तथ्य को कलकत्ते से प्रकाशित ब्रिटिश दैनिक स्टेट्समेन ने अपनी प्रत्यक्षदर्शी रिपोर्टों में सत्यापित किया था और कांग्रेस की निष्क्रियता पर भी चुटकी ली थी। इन सब पक्षों को जानकर भी जिन्ना की धर्मनिरपेक्ष छवि का कुछ ढोल पीटने वाले बुद्धिजीवियों को असंवैधानिक गतिविधियों को ऐसे अनेदखा कर देते हैं। इस नियति के लिए हम कब तक अभिशप्त रहेंगे?

बेटियों के नाम

मानव को धर्मशक्ति स्वरूपा है मातृशक्ति,
बुद्धिरूपा शारदा का रूप धारें बेटियां।
घर परिवार सौम्य व शालीन ही बनायें,
सदा लक्ष्मी का रूप ही सँवारें बेटियां।।
यदि कहीं अनाचार करना चाहे प्रहार,
काली बन रक्तबीजों को पछारें बेटियां।
कल्पना की उड़ान से अन्तरिक्ष को भी नापें,
स्वप्न में भी कभी हिम्मत न हारें बेटियां।।

लक्ष्मी प्रसाद गुप्ता